श्री अग्रस्वामी अष्टयाम पदावली

श्री अग्रपद (१) रजनी अल्प राम उठि बैठे सोइ गई सीता ह्वै गयो भोर।
बार बार विधु वदन विलोकत मानो पीवत सुधा चकोर॥
हरे हरे चुम्वत चमकन डर कर सों चिवुक चारु टकटोर।
जागि परी जानकी ताहि छिन आलस पगे नयन की कोर॥
वहुरिअंक आरोपि पिया को गौरस्याम शोभित इक जोर।
अग्रअली ऐसी छवि छाडे धिक जाके आवै उर और॥

श्री अग्रपद (२) भोरभये नव रंग महल में राजत जनक लडैती लाल॥
स्याम गौर अंशन भुज दीन्हें कछु आलस युत नयन विशाल॥
प्रेम मगन दोउ उरझि रहे हैं कनक लता जनु डार तमाल॥
अग्र सहचरी तन मन वारत उझकि झरोखे झाकति वाल।

श्री अग्रपद (३) उठे दोउ अलसाने परभात॥
दशरथ सुत श्रीजनकनन्दनी सौंधे भीने गात॥
विमलादिक सखि चँवर ढुरावती हरषि निरषि मृदुगात॥
अग्र अली को श्रीरज दीजै सकल भुवन के तात॥

श्री अग्रपद (४) आरती हरन आरती राम की।
सुरतरु सुधा धेनु चिन्ता मणि वरषा पूरण काम की॥
दीपावली प्रतिबिम्ब अंग में शोभा सब सुख धाम की॥
अग्र अली वरनै युग चन्द पर जानकि जीवन नाम की॥

हिंडोल

श्री अग्रपद (५) देखो झूलत राघो डोल।
जनकसुता लीन्हें संग शोभित गौर श्याम तन लोल॥
हीरा पन्ना लाल पिरोजा रतन खचित वे मोल।
क्रीडत राम जानकी दोऊ बाजौ दुंदुभि ढोल॥
हँसत परसपर प्रीतम प्यारी आनन्द बढयो सचोल।
अग्र अली सुनि २ सुख पावती बोलहि मीठे बोल॥

—o—

जै रहे अवधेश ललन मिथिलेश लली की जै रहै।
पिय सांवरे सोहैं घटा सिय दामिनी सी छा रहे।
बातैं मधुर रस रहसि के आनन्द जल वर्षा रहै।
अति रंगभरे झूलै दोउ दोउ ओर सखिय झुलावही।
झोका सरस झुकि झुमि झुमि भूषण झमा झग बजि रहै।
चहुं ओर से नागरि खड़ीं बाजे सुमधुर बजावही
कोउ तान लेती तरंग सो चातक मयूरिसि होइ रहै।
तिरछी नजर हंसि हेरि हेरि फूलगेंद की चोटै चलैं।
श्री प्रेम अलि यह चाहती नित नैन में छाये रहैं।

दतुवन

राम सिया पग धोवति अलियां ।
निजकर कमल सनेहु सुरलियां ।।
मनुरवि किरण सुवर्ण सुपात्रनि कुडमल कर पंकज मनु कलियां ।।
विगसि मलति धोवति हिय लावति चूमति शीश नैन परसतियां ।।
मृग मद मलय कपूर सुकेशर सुरभित जल झारी कर धरिया ।।
अरुण पीत पुनि अरुण नील दल दल बिधुकिरण कमल छवि छलिया।।
गोद राखि सौन्दर्य चरण दोउ चिन्ह बिलोकति निज सुख थलियां ।।

श्री अग्रपद(६)दतुबन करत दोउ मिलि जोरी । दशरथ सुत श्री जनक किशोरी ।।
मृग मद मलय कपूर सुवासित युगल दातुवन सखि दइ कोरी ।।
इक प्यारी इक प्रीतम के कर मज्जन लगे दन्त सुख सोरी ।।
हँसि २ मज्जन करत परस्पर बातैं करत मधुर मुसुकोरि ।
दन्तावलि झलकत दोउन के छिटकी रही कर चन्द करोरी ।
दोउ के दन्त धोबावत हंसि २ अग्र अलि सन्मुख रस बोरी ।।

श्री अग्रपद(७) दन्त धाबन–दतुवन करत सिया रघुराई ।
सुन्दर सुखद रसीली दतुवन रदन धरत छबि छाई ।।
जीमी कर जल परसत दोऊ मुख प्रछाल अ गुछाई ।
अग्र अली उरझी चितवनि में मन्द २ मुसुकाई ।।

मंगल

श्री अग्रपद(८) मंगल करि शृंगार सुतन मंगल मई ।।
मगल थार सजाई द्रव्य मंगल मई ।
मंगल यूथ बनाई सखिन मंगल मई ।।
मंगल कर लिये सौज चली मंगल मई ।।
पहुंची हेमनिवास जहां मंगल मई ।।
निज २ सखि लिये वाद्य वजावत रस मई ।।
गावन लगि बहु नारि राग मंगल मई ।।
आलस युत सिय प्यार जगे मंगल मई ।
सखी सब झांझरि माह विलोकती सुख मई ।।
देखत युग विपरीत रहस मंगल मई ।
विनदुकूल झलकात गात सब रस मई ।।
लखि सखि सब सुख सिन्धु मगन मंगल मई ।
बैठे दिय गलवाहि रूप मंगल मई ।।
पुनि दई परदा खोलि झांकि मंगल गई ।
सखि सब रूप निहारि बारि तन मन दई ।।
पुनि दोउ को बैठाइ चौकी रतनन मई ।
मंगल द्रव्य दिखाई प्यारी प्रीतम नई ।।
पुनि कोउ के शृंगार करी मंगल मई ।

मंगल भोग लगाई शेष सखियन लई ।।
आरति करि पट वारि वारि मंगल मई ।
अंग अंग छवि अवलोकि सखिन वलि २ गई ।।
मंगलमय यह ध्यान अग्र जे गावई ।।
पिय प्यारी रस महल टहल सुख पावई ।।११।।

श्री अग्रपद (९) मंगल आरति करि सखि राम रिझाइ कै ।
भूषण कछुक उतारहिं प्रभु मन पाइ कै ।।
कोइ सखि पट पहिरावहि, दूसर छोरि के ।।
अष्ट कमल दल मणि चौकी दुइ जोरिधै ।
द्वो चौकी वसु २ सखो टहल चतुरि बड़ी ।
अष्ट कोण दल २ पर आयसु लखो खड़ी ।।
वागीशा, माधवी, प्रियाहरि, मनजीवा ।
नित्या, विद्या सबिद्या, कूटरूपा--सींवा ।।
आठौ मख्य ढिगन द्वौ खड़ी सोरह सखी ।
अवरनि ते लै देहिं आठ कह मन लखी ।।
सिय चौकी पर मुख्य आठ सोरह सखी ।
जस रघुवर सेवा महं तस सिय के लखी ।।
विमला, उतकर्षणी, क्रिया, योगा, , प्रवी !
इशाना, ज्ञाना, सत्या, सेवा कबी ।।
आठ आठ जे मुख करहि मन की लखी ।
समय समय सब लिहे ।अपर कोटिन सखी ।।
परम मुख्य सखि पांच सुशीला, लक्षमना ।
हेमा, अतिशीला, सुचारुशीला मना ।।
पांचहु की आज्ञा सुसर्व सेवा सुची ।
अर्ध देति सखि अग्र राम सिय की रूची ।।

रंग भरि जोड़ी, सदा चिर जीवो ।
सदा बिहार करो रंग मन्दिर रंग किशोर किशोरी ।।
सदा सुहागल के अनुरागिनि रंगे रहो बड़ भाग बढ़ोरी ।
प्रिय के प्राण बसो सिय सुन्दरी सियमत स्याम वसोरी ।।
पियकी चाहसु चात्रिक लौ रहो सिय की मया स्वाति बर्षोरी ।
सिय मुख चन्द सुधा रस द्रवो नित पिय के नैन चकोरी ।।
हमरे नैन प्राण की सर्वस अधिक २ सुख रस सरसोरी ।
कृपा निवास उदास महल की टहल लगो सो लगोरी ।।

तेल उवटन

श्री अग्रपद (१०)

श्री प्रसाद प्यारो और प्यारे और चारुशील अंगन-
सुगन्धमय उवटनो लगावती ।

दोउन के खुलेगात अ ंगन छवि झलमलात मानो शशि-
कोटि सुधा किरण को लजावती ।।
निरखि २ सुभग गात आनन्द उर मैं नमात कोटिन-
रति काम आली दोउन पै बारती ।
कोमल कर में सुधार उवटनो लै वार वार दोउन-
सखि हाथ अग्र देति रस भावती ।।

श्री अग्रपद (११) सिय प्यारे को (सखियां) लगावति उवटन ।
पद्म राग मणि की चौकी पर दुग्ध फेन सम बिछे बिछावन ।।
तापर स्यामा स्याम बिराजे कोटि मदन रति द्यु तिन लजावन ।
अति सुगन्धमय तैल नरायन तामें और मिलाय सुगन्धन ।।
शिरष कुसुम हू ं ते अति कोमल अ ंग २ सुकुमार निरखि तन ।
लै उवटन कर चहत लगावन करन कठोर समुझि हिय धरकन ।।
अति भयभीत सहमि सखि लगवति लखि अदभुत छवि बारति तन धन ।
कोई सखि प्रीतम अ ंग लगावति अग्र लगावति प्यारि सुभगतन ।।

श्री अग्रपद (१२) उवटन करत रंगाली अलियां ।।
युगल अली दोउ चरन लगावति अ ंग बिलोकति छलियां ।।
युगल २ सखि दोउ भुज मीड़त उर पीठन युग आलियां ।।
अग्र अली दोउ रसिक परस्पर मुख मीजत छलि वलियां ।।

श्री अग्रपद (१३) उवटन करत सिया रघुराई ।।
सरस सुगन्धन वन्यो उवटनो लेकर उर सरसाई ।।
जोई २ अ ंग लगावत प्यारे सोई प्यारी मन भाई ।।
अग्र अली के जीवन दोऊ निरखत दृग न अधाई ।।

श्री अग्रपद (१४) सिया अस्नान उवटनाते अज किन्ही केतिक उत्तम नारी ।
तेई शील सुन्दर सौभागिनि बहुत गुनन के भारी भारी ।।
जानकि अ ंग तीरथ में न्हाय बाम भई जग में उजियारी ।
बनिता श्री रघुबीर वल्लभा अग्र स्वामिनी नहीं कोउसारी ।।

जल विहार

श्री अग्रपद (१५)—मज्जन करत लाल सिय प्यारी ।
अष्ट कोन युग चोकी तापर दोउ दिशी कनक कि नारी ।।
बैठे पिय प्यारी तिन ऊपर अ ंगन द्यु ति अनुसारी ।
चहु ंदिशिते जल यन्त्र सखी लिय वरषि सुरभि सुठि बारी ।।
उमगि २ जल धार लेत शिर हंसी मिलि करत खेलारी ।
मलि २ अ ंग सखी अन्हवावति' निरखत छवि बलि हारी ।।
मज्जन करि सर पैठी कलोलत भूषन वसन बिसारी ।
जल बिहार करि अग्र अली सव तट पट भूषन धारि ।।

यज्ञ

श्री अग्रपद(१६) यज्ञ (सु) करत रसिक सिय प्यारो ॥
सुरतरु तर मनिमय वेदी विच दाहिन सिय पिय बाम निहारो।
दाहिन इक अलिथार लिए कर पायम लैं सिय पिय कर धारो ॥
द्वादश आहुति युगल मन्त्रसों जातवेद तिर्पित किय भारो ।
हवन कुण्ड परिकरमा कीन्हे अग्र अलि के प्रान अधारो ॥

दान

श्री अग्रपद(१७) दिव्य मण्डप महा यज्ञ किये साजयुत दानदिये श्रुति सखी रुपआई ॥
विप्र तनया कही सीय रघुवर लही हरदि दधि अक्षतैले छिटाई ॥
धेनु भूषन बसन रत्न वासन अशन अन्न वाहन अगित दीनजाई ॥
पानिध्व अंग शृंगार दूसर किये पूजि पियप्यारी सवसखि सुहाई ॥

पति पूजन

श्री अग्रपद (१८) प्यारी कटि सारी जरतारी सुधारी अली प्यारे कटि धौती-
सुपीली झलकारी है ॥
प्यारी वक्षोज पर कंचुकी सुधारी झीनी प्यारे—
उर कंचुक सुमोतिन की धारी है ॥
प्यारी गले चन्द्रहार प्यारे गले मुक्तमाल अंगद औ—
पहुंची सुमुद्री नग जारी है ॥
चन्द्रिका शिपेंच पाग कानन में कर्नफूल कुण्डल—
अलि अग्र हाथ आपने सुधारी हैं ॥

सियजु पिय पूजत प्रीति पली।
यज्ञ दान करि हर्ष हृदय भरि जन जिय रंग रली ॥
मंगलमय शृंगार किये अलि प्रीतम प्यारि भली ।
निज २ सौज सजी सखियन युत पास पिया के चली ॥
चन्दन अतर धूप दीपादिक फूलन माल ढ़ली ।
परिकरमा करि पिय बैठाये सिय सुख वेली फली ॥
पुनि सखियन पुजे दोउ प्यारे गान विनोद छली ।
आरति करि शौन्दर्य विलोकत वलि सुखमा सुथली ॥

कलेऊ

अग्रपद(१९) करत कलेउ मिलि दोउ प्यारे।
जनक नन्दनी अवध दुलारे ॥
बरफी मोदक तपत जलेबी खाझा घेवर अति रुचीकारे ।
बीज पाक रसगुल्ला खुरमा मोहनभोग पूप रस दारे ॥
पूरी कचौरी मठरी पापरि गुझिया गोझा मिसरी डारे ।
और अनेक भांति के व्यंजन कनक कटोरन अग्र सुधारे ॥

सास ससुर पूजन

श्री अग्रपद(२०) अंग २ करि शृंगार सखिय सब साथ में ।
पूजन चलि सिय सासु प्रेम रस राग में ॥
पूजन के सब सौज साजि लिए थाल में ।
गावति नृत्यत चलो सखिय उमगात में ।
पहुंची सासु निवास अंग छवि को कहै ।
कोटिन रमा प्रकाश सिया द्युति अंग लहै ॥
देखि सासु अति प्रेम वात्सल रस भरे ।
भरि अंकवार उठाय लेई निजहिय धरे ॥
मस्तक की करिघ्रान बलैया लेइ के ।
इकटक मुख छवि निरखी अपनपौ भूलिकै ॥
सासु गोद ते उतरि सीय पूजन करी ॥
षोडष भांति विधान प्रेमरस में भरी ॥
सासुन दई अशीश वधू अनु दिन बढ़ै ।
प्रीतमसंग अनुराग कबहुं छिन नाघटै ॥
गंग जमुन नहि रहै जगत या ना रहै ।
अचल रहै अहिबात सिया पिया साथ है ॥
पूजन करि सिय सासु आइ निज महल में ।
प्रीतम करि आलीग अग्र सिय साथ में ॥

मातृ पितृ दर्शन

श्री अग्रपद(२१) रघुवर मातु महल को जात ॥
भरत लखन रिपुदवन साथ लिये और लखन के ब्रात ।
कन्ठ सुभग गजमुक्ता माला शिर पगिया झलकात ॥
नख शिख साज शृंगार मनोहर सखन संग बतरात ॥
धनुष बान करमें सुठि सोहत अंग लखि मदन लजात ॥
मातु महल के पौरी पहुचे तुरंग उतरि चहु भ्रात ।
मातु समीप बैठी अनुजन युत करि प्रनाम नमि गात ॥
गोद बिठाइ लाई कौशिल्या मुख चूमत हरषात ।
बालक ब्रत करि २ के चेष्टा मातु गोद हरलात ॥
जननी देखि २ सुख फूलैं आनन्द उर न अमात ।
बहुतभांति पकवान मिठाई निज कर कमल खिलात ॥
करि कलेउ अम्बा प्रनाम करि संय सखन सवभ्रात ।
अग्रस्वामी निज महल पधारे प्यारि लपटि भरि गात ॥

वृहद शृंगार

सकल सुनारी प्यार परमभरि करत शृंगार संवारि युगलवर ।
लहंगा लालित कलित कटि ओर्नि कुच कंगु की वागोवर नागर ॥

युगल कमलपद विमल महावरि रचित सुघर लखि अरुण नैनकर ।
पद पावन पद पान मनोहर पदज विभूषण पायल नूपुर ॥
गुल्फै कमल जानु कटि किंकिनि क्षुद्र घंटिका माल करनिगर ।
उदर रोंम राजी त्रिवली वर नाभि सुभग सोंधी सींचत तर ॥
मलय कपूर सुकेशर लेपन प्रिया उरोज सुप्रितम उर पर ।
पदिक हार माल। मोतिन की चम्पकली दुलरी तिलरी ढर ॥
मणि माला मुक्तावलि कण्ठी चौकी चौक सु राम सुभग धर ।
भुज प्रलम्ब अगद युत भूषण चारि चारु चूरी मुदरीपर ॥
युगल वदन सुख सदन मनोहर चित्र कपोल चिबुक वेंदिथिर ।
दशनदमक दुति वीरी रोचिक बिम्ब बिलज्जित मृदु अरुणाधर ॥
श्रवण तरोने फूल झूमका कनक लता मनु फूल फरी फर ।
लाल श्रवण कुण्डल धरि सुघर निशशि मण्डल मनो कीन्ह मकर धर ॥
नाशालटकन सहित नथुनियां दृग अन्जन खंजन तिमि नाशर ।
भाल विशाल युगल श्रीशाभित अर्धचन्द्र उपमा जग की हर ॥
टीको वन्दी शीश फूल मणि कीट चन्द्रिका जटि मूक्ता लर ।
अलक झुकाई इन्दुसदन जनुसुधा लोभ नागिनि न सकीटर ॥
मुक्तन मांग, भरी गुहि वेनी कछु उपमा आई मेरे उर ।
शीश सुहाग पांति मनु उधरी परी सुपाठि गुमान गहर टर ॥
दोउ कर सुमन छरी उपरना शारी सरस फैल फवि सुन्दर ।
कृपा निवास श्री जानकि वल्लभ दुलरावति सहचरि रंग मंदिर ॥

अली शृंगार भवन मधि राजत ।
ललित विभूषण अरस परस दोउ अंग २ प्रति साजत ॥
बड़े चारू रतन चौकी पर संखमाशील अपार ।
जनकललो रघुलाल सलोने रूप अमित रतिमार ॥
नवल २ सखि करकंजन लिये दिव्य विभूषण ठाढ़ी ।
कोउ दर्पण कोउ अंग राग लिये प्रीति अलौकिक बाढ़ी ।
सजि शृंगार दिव्य सिंहासन बैठे छवि रस रासी ।
चवर्ण पान दशक की चमकनि मृदुल बचन रस भाषी ॥
छकी सखी पिय प्यारि रुप रस गावति कोकिल वानी ।
भोजन मधुर कराई सखि अचवाइ दिव्य सरि पानी ॥
रसिक अली आरति सजि ल्याई सौक साथिया पूरी ।
मंगल कुम्भ रुचिर दीपावलि सौज सकल रचि रुरी ॥

शृंगार आरती

सखि आरति करै रस प्रेम भरी सिय रघुवर को शृंगार करी ॥
मनिमय थार सखिन कर राजतवाती रवि शशि दुति निदरी ।
वाजहि ढोल निशान दुन्दुभी शंख झांझ करताव घरी ॥
नाचहिं गान करहिं सखि थेइ थेइ सुमन माल मणि होत झरी ।
रामचरण सियराम रुप लखि सखि आन्नद रस सिन्धु परी ॥

सभा कुन्ज विहार

श्री अग्रपद २२) मकुट उद्योत होत, दिन दिशिते, ब्रह्म काल नहि पावत ब्रह्मवित
आतुर अमर अगमनै धावत, रामचरन वन्दन निद्रागत ॥
उठि आवत जो जही तही ते भोर भये हेलें परसन को ।
आमक भोर भुली ऋषि सन्ध्या दिव वाशी आये दर्शन को ॥
निवसत निकर असुर सुर नर मुनि कीट घोष जय घोष अपार ।
अग्रदास वलि पाद पीठ पर वन्दी वेद करत कै बार ॥

श्री अग्रपद(२३) चंचल नारि तुम्हारि कींरती दशोदिशा को धावत ।
सुर नर असुर लोक लोकन में रघुपति तुव यश गावत ॥
घर घर वार फिरती कुलटा ज्यों निकट नाहि सुचि पावत ।
विसद विशाल जशहि विस्तारत यह अचरज मोहि आवत ॥
पतिव्रत प्रण छोडे है यद्यपि सबहि याहि सुहावत ।
सन्तन जीवन मूरि सदाही अग्रदास जिय भावत ॥

श्री अग्रपद(२४) अकरन न्याय कियो यही धाता ।
अति ही चतुर सृष्टि रचना को अग्र सोच समुझत अति धाता ॥
फणिपति रघुपति को यश सुनी कै जौपे मूड डुलावत ।
फूट जाय ब्रह्माण्ड खण्ड सब बहुरि करत दुख पावत ॥
याते उरग श्रवण बिन सिरजे जगत भंग डर आवै ।
विशद श्रुत श्री अग्र स्वामि के कौन न ग्रीव डुलावै ॥

चौपड़ खेख

श्री अग्रपद(२५) चौसर खेलत रसियालाल, प्यारी संग सुख आल ॥
सारी फल जरिदार मखमली स्याम, पीत सित लाल ॥
पाशा हीरा के अति सुन्दर युग दल सखि कर चाल ।
श्री प्रसाद प्यारी दिशि चातुरि चारूशिला उतवाल ॥
दम्पति टोल हने गनि गोटी कौतुक कर सियलाल ।
चतुराई चित चोरत खेलत दोऊ नैन विशाल ॥
प्यारी हँसि प्रीतम को हेरत कर से न पाशा चाल ।
देखि लाल ठगवग से रही गये कुच विच इन्द्र सुजाल ॥
भूलि गये चतुराई आपनि जीत लई सिय वाल ।
हारि लाल सिय अधर चूमि लई अग्र धूर्त वडे लाल ।

श्री अग्रपद(२६) नर वर राम तिया वर सीता ।
या जोरी को उपमा नाही धाता निरखि रह्यो भय भीत ॥
सोच सन्देह करत चतुरानन दूजे काहू सृष्टि चलाई ।
उभय लोक पर्यन्त फिरयो पै यह मूरती गति कहू नपाई ॥
वेद विचार कियो जब ब्रह्मा नेति २ इनही को गावत ॥
रामजी इष्ट जगतपति नियंता सोई अग्रदास जियभावत ॥

श्री अग्रपद(२७) राम से राम सीता सी सीता ।
शिव बिरंचि शारदा शेष शुक पटतर खेजि कलप बहु बीता ।।
सुन्दर शील सुहाग अमित गुन अखिल लोक नरनारी जीता ।
अग्र स्वामी स्वामिनी उजागर नेति २ श्रुति गावत गीता ।।

श्री अग्रपद(२८) जगत जपत रघुनाथ नाम सब राम जपत सीता को सुमिरन ।
रामचन्द्र को ध्यान धरत मुनि बसत जानकी रामचन्द्र मन ।।
शिव वियंचि के धनुषधरन धन रघुवर के मैथिली महा धन ।
परम हंस कुलराम भजन भर अग्र स्वामी इक पत्नी को पन ।।

श्री अग्रपद(२९) युवती गुण जानकी पतिव्रत भाग सुहाग सुभगता सागर ।
सत्य सोच जित क्रोध दययुत कीरति विशदलाज मृदु आगर ।।
एक नारि व्रत न्याय अमितगुन रिझय राम नयना वर नागर ।
त्रिया तिलक निर्दूषण भूषण अग्र स्वामिनि जगत उजागर ।।

श्री अग्रपद(३०) साचो सूहाग जानकी तेरो रघुवर भल वश कीन्होरी ।
परसत पानि और नहि परस्यो इक ललना व्रत लीन्होरी ।
तोसो नारि नहीं त्रिभूवन में पिया प्रेम रस भिनोरी ।
अग्र स्वामी मन वच क्रम तोको रीझि अलिंगन दीन्होरी ।।

श्री अग्रपद(३१) इक नारि व्रत न्याय धरयो ।
अखिल भूवन अच्युतनहि हरि को निर्णय यह रघूनाथ करयो ।।
बनिता रतन शिरोमनि सीता शील सुजश सबही प्रचूरयो ।
ता तन मगन भये तनमयता पैठि राम नाहि न निकरयो ।।
कहा भये जो कोटिक पतनी सुख स्वारथ एको न सरयो ।
रूप उदारविनय लावणि गुण अग्र स्वामी मनो रथौ भरयो ।।

श्री अग्रपद(३२) मेरी स्वामिनि सूहाग अद्वितिय पटरानी ।
रघुपति को अवर नारि सपने न सुहानी ।
लावनी गुन रूप शील सबहि लीक तानी ।
अग्र स्वामी सियाराम विदित जग कहानी ।।

श्री अग्रपद(३३) रूप रासि सोता दुलहिन को देखन आई गुरूजन नारि ।
उठत नही अतिकाल ह्वै गयो पढि मोहिनीमूढ़ मनो डारि ।।
रामचन्द्र मिलिवे कंह आतुर वासु कि शेष कठिन भयो भारि ।
अनंग पीन अकुलाइ दण्ड कर त्रासत तुरगनि बुद्धिविचारि ।।
रवि पूर्वज हमरो मंगल रथ प्रेरन को सुधि बुधि जुविसारि ।
ये अशु दर्शन उनके नाते बेगि चलो कुल जानि दुखारि ।।
सहि नहि सकत वियोग पलक को अस्ता चलतन रहैं निहारि ।
मदन तरंगनि मगन अग्र प्रभु पाई जीवन जनक दुलारि ।।

सखियों का गान

श्री अग्रपद (३४) वदनार बिन्द पर वलि २ कियो प्यारी ।।
कुन्द इन्दु विद्रुमजुविम्बमिलि मीन मृगलीन खंजन छबि हारी ।

नासिका कीर तिल पुहुप दाडिम दसन हंसन-
विगसन कमल कहा करै सारी ॥
भाल दीपत मुकुट भौह राजीव वर,
भृकुटि सर चाप मनमथ सत हारी ॥
चिबुक त्रिभुवन चारु सुभग सुकपोल तर,
आनन्द कन्द विधिना सँवारी ।
राम सुखदैन मधुवैन स्वामिनि अग्र जानकी नारि वर नृप दुलारी ॥

श्री अग्रपद (३५) राम रमणि गज गवनि अवनिजा चम्पक वरनि मीन मृग नैनी ।
वदन इन्दु अरविन्द कुन्द दुति अधर पिम्ब विद्रुम पिक वैनी ॥
सीता के शौन्दर्य शील व्रत उपमा सकल सकुच भई गैनी ।
वनितावर त्रैलोक्य उजागर अग्र स्वामि उर आनन्द देनी ॥

श्री अग्रपद (३६) सब की सोभा सिमिट लई ।
वैदही को वदन विलोकत अन्तर भूत भई ॥
गजगति हंस जंघ कदली कटि केहरि दसन अनार ॥
कुच नारंगिकान्तिकल धौतहि मुख विधु अम्बुज चारु ।
ग्रीवा कम्बु कपोत अधर विद्रुम दुति नासा कीर ।
नैना मीन नागिनि वेनी अहि कोकिल गिरा गम्भीर ॥
श्रीहत भये सकुच सब जित तित तप व्रत जाय लियों ।
कोउ वन कोउ आकाश अग्नि जल कोउ पाताल गयो ॥
वलि अरु वरुण वह्निवासवमिलि वदत भये यह बात ।
सीता शरण गहो सब तजि कै अग्रदास वलि जात ॥

श्री अग्रपद (३७) मेरी स्वामिनि को अविचल सुहाग ॥
जाकोपरसि अवर नहि परसी रघुपति दिन २ बढयो अनुराग ।
सीतासी सिरजी न सपतनी केलि अकंटक लग्यो न दाग ॥
अग्र स्वामि स्वामिनी अहर निसि सुख विलसत दोउ भूरि भाग ।

श्री अग्रपद (३८) सर्वोपरि मम स्वामिनी रावो की प्यारी ॥
जाकोपरसि अवर नहि परसी व्रत लीन्हो इक नारी ॥
स्ववश किये दशरथ नृपनन्दन नाहिन कोऊ सारी ॥
वदेही के कमल वदन पर अग्र अली वलिहारी ॥

आखेट लीला

श्री अग्रपद (३९) देखु सखी मृगया खेलन को राम लला चले जात ॥
भरत लखन रिपुसूदन संग में सखन सोह बहु व्रात ॥
चतुरंगिनि सेना संग लीन्हे दुदुंभि ध्वनि बहरात ॥
नखशिख सुन्दर गात मनोहर लखि दुति काम लजात ।
धनुष बान कर में मुठि सुन्दर कटिभाथा चमकात ॥
चपल तुरंग नचावत हंसि २ शोभा वरणि न जात ।
अग्र नयन सर नारिन वेधत लिये जात मन सात ॥

श्री अग्रपद (४०) रघुबर लागत है मोहि प्यारो ।
अवधपुरी सरयू तट विहरै दशरथ प्रान पियारो ॥
क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल पीताम्बर पट वारो ।
नयन विशाल माल मोतिन की सखि तुम नेक निहारो ॥
अंग २ रूप अनूप बन्यो है चित से टरत न टारो ।
माधुरि मूरति निरखो सजनी कोटि भानु उजियारो ॥
जानकि नायक सब सुखदायक गुण गण रूप अपारो ।
अग्र अली प्रभु की छबि निरखी जीवन प्राण हमारो ॥

श्री अग्रपद (४१) श्री राघो जिकि आज सजी असवारी ।
दशरथ राज कुमार लाडिले शोभा न्यारी न्यारी ॥
सजे तुरंग रंग राजन के भीर गजेन्द्रन भारी ।
जगमग झूल जरी की सोहे रतन जड़ाव अंबारी ॥
धूम गरज सो भरत जी आये श्री रघुनाथनिहारी ।
होत कुलाहत लखनलाल के रिपु सूदन छवि न्यारी ॥
हरषे देव सुमन बहु बरषे जय २ कार उचारी ।
ब्रह्मादिक दर्शन को आये मोहन बदन निहारी ॥
रवि शशि कोटि बदन की शोभा चन्द्रकला उजियारी ।
अग्र अली प्रभुकी छवि निरखे चरण कमल बलिहारी ॥

श्री अग्रपद (४२) अब देखो रामजी ध्वजा फहरानी ॥
झलकत ढाल फरकते नेजा गरद उड़ी असमानी ।
लक्ष्मण वीर बालि सुत अंगद हनुमान अगवानी ॥
कहत मन्दोदरि सुनु पिय रावण त्रिभुवन पति सैठानी ।
जा सागर को गर्भ करत है तापर शिला तराई ॥
तिरिया जाति बुद्धि की ओछी उनकी करत बड़ाई ।
भुव मण्डल से पकरि मगैहो ओ तपसी दोउ भाई ॥
हनुमान से पायक उनके लक्ष्मण से बलि भाई ।
जरत अग्नि में कूदि परत है कोटि गने नहीं खाई ॥
मेघनाथ से पुत्र हमारे कुम्भकरण बलि भाई ।
एक बार सन्मुख होई लरिहै युग २ होत बढ़ाई ॥
कहति मन्दोदरि सुनुपिय रावण तोहि मम एक न भाई ।
राति को सपनो एसो भयो है सोनेकि लंक लुटाई ॥
वन्दर एक लंक बिच आयो घर २ धूम मचाई ।
बाग उखारि समुद्र में डारे लंका आग लगाई ॥
गरवी रावण गरव न कीजै गर्वहि लंक लुटाई ॥
जाय मिलो रघुनाथ कुंवर से लंक अचल हो जाई ॥
इक लख पुत्र सवा लख नाती मौत आपनी ठानी
अग्र स्वामि गढ़ लंका घेरे अजहु न चेत्यो मानी ॥

श्री अग्रपद(४३) जब कर राघो जी बान धरेंगे ॥
संग रघुनाथ भीर वनचर के कपिदल कोपि चढैंगे ॥
स्याम घटा घन झुकि अँधियारी सूरज गगन छिपैंगे ।
पचरंग बाण राम लक्ष्मण के सागर तीर रुपैंगे ॥
जा सागर को गर्भ करत है ता पर सेतु बधैंगे ।
जामवन्त हनुमान नील नल महाधुनि गर्ज करैंगे ॥
रात भयानक सपना देखो लंका कोट लुटैंगे ।
नाम विभीषण बन्धु तुम्हारे रघुपति जाय मिलैंगे ॥
मेघनाथ से पुत्र तुम्हारे वे नहीं धीर धरेंगे ।
कुम्भकरण बल बन्धु तुम्हारे रण में जूझ मरैंगे ॥
महिरावण से योधा मरि है लंका नाश करैंगे ।
सहस योगिनी मंगल गावैं खप्पर वारि भरैंगे ॥
दशशिर और बीस भुज तुम्हारे एकहि बाण हरैंगे ।
जो नारद मुनि मुखते भाषी भारत राम करैंगे ॥
कहत मन्दोदरि सुनु पिय रावण रघुवर नाहि फिरैंगे ।
अग्र स्वामी को लै मिलो जानकी किहु विधि विघ्न टरैंगे ॥

श्री अग्रपद(४४) है यान चढे रघुनन्दन आय हनुमत चंवर ढुरायोरी ॥
जामवन्त सुग्रीव विभिषण अरु अंगद मन भायोरी ॥
करत पुनीत देव सब हरषे दण्डक वन प्रभु आयोरी ।
देखि सिया दण्डक वन शोभा ऋषि विचरे भय त्यागोरी ॥
चरित पुनित किये रघुनन्दन अवध निकट हरि आयोरी ।
उतरे पुष्प निकट सरयू के रघुपति आज्ञा पायोरी ।
चलत तृषित अति गये सकुच मानो मरुत जलद जल लायोरी ।
व्याकुल अंध अवध जेहि कारण उदित अरुण होई आयोरी ॥
होत अवध आनन्द बधाई सखियन मंगल गायोरी ।
सुख अवलोकि कोक जिहि लाजैं रघुपति पुरी सुहायोरी ॥
चर अरु अचर हर्षवंत तँह थँह रघुपति कीरति गायोरी ।
द्विजन सहित आये नृप द्वारे अग्र दास गुण गायोरी ॥

श्री अग्रपद(४५) सीताराम अवधपुर वासी नित दरसन उठि पावै जी ।
रघुवर लक्ष्मण भरत सत्रुह्न शोभा वरणि न जावैजी ॥
सग सखा सरयू तट विहरैं राम लखन दोऊ भाई जी ॥
सुन्दर वदन कमल दल लोचन उर वनमाल सुहाई जी ॥
अवधपुरी नर नारी निहारे निरखि परम सुख पाई जी ।
मातु कौशिला करत आरती अग्र दास वलिजाई जी ॥

श्री अग्रपद(४६) (आवत) रघुनाथ अनुज संग लीन्हें, खेल किये चौगानै ।
अश्व सुगज रथपागे, बने विचित्रें बागे. —
अरुण पीत सित चँवर छत्र वर बानै । खेल० ।

राजकुमारी अति सुकुमारी झरोखन झाकति बिबिध—
मनोरथ ठानति, करत नयन मधु पाने ।। खेल० ।।
कोउ वारत तन, कोउ वारत मन, कोउ वारत धन—
निरखि नयन छबि, पुष्पाञ्जलि बरषाने ।। खेल० ।।
मंगल भाजन लै नीराजन, सब सुखसाजन प्राण—
मिले जनु, जननि निरखि मन माने ।। खेल० ।।
कियो प्रवेश सदन सीता के कलप वेलि तरु रंग —
सीता के, अनग केलि रस रहस अग्र गुण गाने ।।खेल० ।।

श्री अग्रपद(४७) करि सिकार आये रघुनन्दन संग सखन सब भ्रात ।।
पितु समीप में जाय जुहारे सुत लखि अति हुलसात ।
निज कर कमल उठाय गोद धरि चूमत लखि'भय गात ।।
अति दुलार से पूछत पुनि २ खेटक के कुशलात ।
कहि सुनाय खेटक की वातै सुनि २ पितु पुलकात ।।
पितु प्रणाम करि निज बैठक में आय गये रसरात ।
रतन जडे चौकी पर बैठे वैठक में सब साथ ।।
श्रम सीकर मुख पर राजत जनु कमल कोष हिम पात ।
चंहुदिशि सखासौज सब लीन्हे सब सुन्दर सुठि गात ।।
कोउ मुख ऊपर मधुर पवन करि निरखि २ वलि जात ।
बहु मेवा पकवान मिठाई सुरभी जल शितलात ।।
भरि २ थालन में सजि २ के अम्ब मेजी बहुभाति ।
भ्रात सखन युत पावन लागे हसि २ बहु बतरात ।।
एक २ सखन से बूझत प्यारे घर २ के सब बात ।
करि भोजन अचवन को करि कै पानखात मुसुकात ।।
गानवाद्य होवन लागी पुनि आन्नद कहि नहि जात ।
पुनी प्यारी सुमरन हो आई मिलन हिये उमड़ात ।।
गान वाद्य को करि समाप्त पिय शीघ्र चले अकुलात ।
अग्रस्वामिनी से मिल के हिय अति किन्ही शितलात ।।

श्री अग्रपद(४८) रघुनन्दन प्रभु आवै ।
उपवन बाग शिकार खेलि के चढ़े तुरंग नचावै ।।
कीट मुकुट मकरा कृत कुण्डल उर मणिमाल सुहावै ।
कटि पर लट पट पीत बिराजै कर गहि'बाजी उड़ावै ।।
चतुरंगी सेना संग सोहति पचरंगधुज फहरावै ।
बचत निशान भेरि सहनाई गदग गगन मंह जावै ।।
बन्दी जन गन्धर्व गुण गावत भावत प्रभु हिं रिझावै ।
सुरनर मुनि ब्रह्मादि देवता इन्द्र पुहुप झरि लावै ।।
अवधपुरी कि बधूटि अटाचढि निरखिपरम सुख पावै ।
मातु कोशल्या करत आरती अग्र अली वलि जावै ।।

श्री अग्रपद(४६) देखुरी नीके रघुन्दन ।।
सीता कहति सखी अपनीसो रसिक राय शिर मौर स्यामतन ।।
दृष्टि चलत नहि इत उत सजनी रुप रासि सो मोमन फन्दन ।।
अग्रस्वामी मौ मोह वढयौ अति ज्यों चकोर चन्द हि अभिनन्दन ।।

श्री अग्रपद(५०) प्रीतम मग जोहति सिय प्यारी ।
कनक महल के खिरकी पर है सखियन युत निरखति सुकुमारी ।
रहि न जात प्रीतम विनु देखे गुणन सुमिरि पिय विरह निवारी ।
छिन २ विरह के उठत खुमारी विकल प्राण मनु मीन विचारी ।।
कोई सखि कहि पिय आवत हैं येह आतुर ह्वै तिहि और निहारी ।
तेहि छिन प्रीतम आय अग्र अलि भरि अंकवार मिली सिय प्यारी।।

श्री अग्रपद(५१) छवीले दोउ आवत भोजन शाल ।
झूमत झूकत चलत मतवारे रसिक रंगीले लाल ।।
करत कटाक्ष परस्पर लपटत दीन्हे गरभुज माल ।
हंसत हंसावत रस उपजावत संग सहचरी जाल ।।
प्राण प्रिया कछु कहत नवेली हरषित होत निहाल ।
अग्र अली बैठे दोउ प्यारे निरखत भोग विशाल ।।

श्री नाभा दोहा

चरण पादुका सुमन युत चढि दीन्हे गल वांह ।
पंगत शाल अनूप जहां चले जानकी नाह ।।
चन्दन सिंहासन सुभग मणिमय जटित जराय ।।
सिय सियवर आसीन तेहिदीन्ही सखिन रजाय।।
निज २ पीढिन सहचरी भई सकल आसीन ।
सो अवसर लखि ऋषि वधुन आनिथार धरि दीन ।।
कंचन थार अनूप अति ओदन मध्य सुबास ।।
व्यंजन चारि प्रकार के परुसे सहित हुलास ।।

श्री अग्रपद(५२)

जेवत कुवर रसिक रघुनन्दन रस आगरि (नागरि) सिय प्यारी ।
छप्पन चार छऊ रस उपरस भोग सौंज सुखकारी ।।
चिन्तामणि चौकिन पर कोमल दुग्ध फेन सम सारी ।
तिन ऊपर रुचि जानि युगल की रचना न्यारी न्यारी ।।
पल्लव फल (रसमय) अंकुर कन्दावलि मेवा मधुरसुधारी ।
चटनी निकर आचार मुरब्बा अमित भांति तरकारी ।।
परसति परम किशोर नागरी जानि युगल रिझवारी ।
सुरभिवन्त शीतल सरयू जल मन्त्रित मंगल झारी ।।
रस भीनी बतियन त्रिरमावति प्यावति निजकर वारी ।
अंचला विजन कमल कर सारति अति मृदु मंजु वयारी ।।
दम्पति एक थार निज मन्दिर जेवत मोद कन्द मृदुभारी ।
अग्र अली के जीवन दोउ तृण तोरति बलिहारी ।।

श्री अग्रपद(५३) मिलि जेवत श्री रघुवीर बने सखि संग लिए मिथलेश लली ।
भुज अंश दिये बहियां जुलसै विहसै मृदु मंजु अनंग रली ॥
करि कौर सिया मुखदेत पिया कहि स्वाद सराहत भांति भली ।
रस के निधि दम्पति रंग भरे निरखैं चहु ओर किशोर अली ॥
मणि मन्दिर में झलकै प्रतिविम्ब मनोज के मानो विहार थली ।
अवधपुर नित्य विहार करैं लखि अग्र अली को आशा फली ॥
दोउ जेवत हास विनोद मगन रस रंग उमंग अंग २ परसैं ।
यरसि परसि पर स्वातिक मातिक ग्रास उठे मुखना परसैं ॥
स्वकर सुधारस कौर सियाको लाल जिमावत हित दरसैं ।
दृगछोर सिहाय सुभाग भरे कर चूमि महा मनमैं हरषै ॥
गीत वाद्य नव तान तरंगनि संग सुहागिनि सुख सरसैं ।
कृपानिवास प्रसाद मिलै मोहि जाको महा मुनि मनतरसैं ॥

श्री नाभा दोहा

हंसि कह लाल सुनाइके अवला कंठ सकेत ।
भोजन को अतिशय सिथिल हापविलास सचेत ॥
भोजन करि बैठे पावत पान ।
गोरी नवल किशोरी सियजू प्रीतम श्याम सुजान ॥
कोउ अलि फूल माल पहिरावति अतरकरावतिघ्रान ।
बीडी बदन अधर छविझलकत मन्द मन्द मुसुकान ॥
प्रीतम हंसि प्यारी तन हेरत अरुण नयन अलसान ।
प्यारो कर गहि उठे लाल तब रसिक अली सुखदान ॥

दिन का शयन

श्री अग्रपद ५४) रसिक दोउ शयन कुंज को जात ॥
भोज करि शुचि पान सुचर्वित मन्द मन्द मुसुकात ।
आस पास सब सहचरि राजै सुभग मनोहर गात ॥
पहुंचे शयन महल के भीतर शोभा वर्णि न जात ।
अति सुगन्ध चहुदिशिमहं महंकत भंवर झुण्ड मड़रात् ॥
बैठे पलका पर दोउ प्यारे करत व्याग रस बात ।
कोई सखि मधुरे बीण बजावत गान करत स्वरसात ॥
पुनि दोउ मिलि अलसान लगेसखि परदा करि चहुकात ।
पौढ गये जब दोउ पलका पर अग्र चरण सुहरात ॥

आरती

शयन समय सुख आरति कीजै लडिलि लाल निरखि छवि लीजै ॥
युगल चरण मुख चन्द्र विलोकनि, नेमन (नैनन) सो अमृत रस पीजै ।
रामसिया सुख सेज पधारे महामोद आनन्द रस भीजै ।
जैति प्रसाद निवास अलीछवि एक पलक न्यारो नहीं किजै ॥

श्री अग्रपद(५५) दिवस मधि सोइ उठे सिय प्यारे ।
उथापन के समय समुझि सखि चहु दिशिते जुरि सारे ॥
मदुरस्वरन गावत सुरसावत मधुर यन्त्र करधारे ।
अलसाने उठि बैठि लटपटे अंशभूजा दोउ धारे ॥
अंग वसन सजि सेज तरे परे पग पावड़ि मखमल घारे ।
मुखगज्जति पटपौछि शृंगारति अलक सुछवि घुंघबारे ॥
असन बसन भूषन मनिबारे आरति पलंग सुधारे ।
न्यौछावरि तृण तोरि आरती करत सुगान उचारे ॥
करि आरती प्रणाम अग्र दोउ दम्पति जैति उचारे ।
उतरि पलगते वाहर बैठे दिव्य सिंहासन प्यारे ॥

श्री अग्रपद(५६) दिवस उठि सेज रहे अलसाय ।
आरति करि पुनि उतरि पलंगते दिव्य सिंहासन आय ।
मनिझारी अचबाय सखीसव निज अंचल अंपुछाय ॥
रतन कटोरन मेवा मोदक निज कर प्रियन पबाय ।
मिश्रित कन्द अधावट पद सुरभित सखिझारिपिवाय ॥
अंचबावति हंसि हेरि कटाक्षन सुछवि निरखि बलिजाय ।
अतर पान मालाउर अरुझनि अग्र सुकर सुरझाय ॥
दोहा—तेल उबटि अन्हवाय के कियो दिव्य शृंगार ।
ऋतु बसन्त अनुरुप वन दम्पति बैठे प्यार ॥
कछु शृंगार फूलन कियो अन्न पाय जल प्याय ।
पान अतर आरति नमन बाग विहार सिधाय ॥

शृंगार बन

श्री अग्रपद(५७)[बाग बिहार करन चले प्यारे ।
श्री नृपनन्दन जनकनन्दनी रुपगुणन में दोउ उजियारे ॥
सखियन करि शृंगार अंग २ पुनिपिय प्यारी के शृंगारे ।
यूथ २ सखि चलि संग में ह्वै गज रथ ऊपर असवारे ॥
कोउसखि शिरपरछत्र किये है शुभ्रचंवर कोउ लिये करधारे ।
अपर सखी लिये बहुत सौज कर पहुंचे जाय बाग के द्वारे ॥
सखियनयुत गज रथते उदरे बागेश्वरि सुनि दौरि सिधारे ।
यूथ अनेक संग सखियन लिये पूजन के सामा कर धारे ॥
पट पाबडे दै भीतर लैगई रतन वेदिका पै बैठारे ।
धूप दीप आदिक विधि करिकै सखियन युत पूजे दोउ प्यारे ॥
पुनि दोउ चले बाग विहरन कौं रोसनपर दोउ फिरत खिलारे ।
कहुं दोइ पुष्प उतरि कमल कर थाक धरि न्यारे न्यारे ॥
रचि २ भूषण विविध रंग के निज २ चतुराई विस्तारे ।
प्यारी पहरावति प्यारे को प्यारे प्यारी के अंगधारे ॥
मोर हंस सुक सारि पढावत मृगी झुण्ड रस चरित अपारे ।

कुन्जन मधि कहुं छुट फुहारे ग्रीषम पावस सम सुखसारे ॥
कुन्जेश्वरी फल ढ़ेर दिखाई पावत अम प्रमोद अपारे ।
फल रुपक हँसि अंग बखानत लपटी झपटि कहुं कुन्जनिहारे ॥
कहुं फूलन के गेंद उछारत कहुं जलकेलि करै मत वारे ।
बिविध बिहार बाग बन कुन्जन करि पुनिअग्र महल पगधारे ॥
किये दोऊ राजत सुमन शृंगार ।
बैठे कनक महल आगन बिच सुमन गुच्छ कर धार ॥
प्यारी के शिर सुमन चन्द्रिका पियशिरै कलँगि सुधार ।
रसिक अली सिय रघुवर छबि पर वारिय वहु रति मार ॥
श्री अग्रपद (५८) हेम महल के सुभग कुन्ज में प्रिया प्रेम लम्पट सुकुमारे ।
कबहूं इकटक मुखछवि निरखत श्रमसीकर लखि करतब यारे ॥
कबहूं निज कर अलक संवारत अधरु चूमि अतिहीन सुखारे ।
कबहूं निजकर चरण कमल लेई सुख निरखत तामै हँसि प्यारे ॥
निज करतल पर राखि प्यारि पदयावक चित्रको करत विचारे ॥
निज कर कमल कठोरसमुझि जिय धर२ धरकत हिय भयभारे ॥
अस न होय प्यारी के पद तल दरकि जाय लगि हाथ हमारे ।
चूमि २ निज नयन लगावत डरि २ चित्रमहावर धारे ॥
रूप देखि निज दृष्टि लगन डर वारि २ जल पियत दुलारे ।
दृष्टि दोष अपने पर लेके वारम्बार होत बलि हारे ॥
कबहू. पुष्पबिभूषण रचि २ पिय प्यारी अंग करत शृंगारे ।
प्रिया रूप में अति अशक्त है होन चहत नहीं पल हून्यारे ॥
समय जानि गुरु नारिन आवन अति कलेश युत दुरतदुखारे ।
प्रिया प्रेम परतन्त्र स्वामिलखि अग्र अली तन मन धन वरे ॥
घूम घुमार गुलाब को घांघरों पीत चमेली कि औढनिझीनी ।
कंज के नील कसे कल कंचूकि पीत जुहीकि संजाव जो दीन्ही ॥
चम्प के हार कनेर के चन्द्रिका देखि के चित्र भईरति हीनी ।
सरयुनि कुन्ज में राम सखे पिया फूल शृंगार सिय छबि कीन्ही ॥
कीन्हें शृंगार गुलाब के फुलन सांवरों फूलिकै फूलन जो है ।
कंचन धाम में धाम गुलाब को छूटि सुगन्ध दिशान कियो है ॥
चम्पकली सि तियान के बीच में पंकज नीलकली जिमि सो है ।
राम सखे सरयू के लतान में रूप वितान तन्यो मन मोहै ॥
आजु गुलाब महल बिच दम्पति राजत सुन्दर वेष कियेरी ।
सरयू तीर कुन्ज सुख पुन्जन बिहँसत दोउ गलवांह दियेरी ॥
फूलन के गहने अँगशो भित मनमथहू को मान लियेरी ।
मोहनी नित्य दरत आनन्द में प्रेम वारुणी छाकि हियेरी ॥

ग्रीष्म का सरयू बिहार

श्री अग्रपद ५९ जल बिहार विहरत सीता संग सुन्दर वर रघुराई हो ।
गृषम काल तुषार सदृश मनु सरयू सुभग सुहाई हो ॥

चारुशिलादि सखीगण साथै शोभा वरणि न जाई हो ।
न्यारी २ नाव सवन की सीतल सौज भराई हो ।।
लेह्य चोष्य फल बिविध भांति लिये सौरभ वरणि न जाई हो ।
रहसि, कोट रचि नाव मध्य तह सौज सकल सजवाई हो ।।
करन लगे जल केलि विविध विधि जल सीकर वर्षाई हो ।
कमलन मारि कमल कर झेलत लाघव लेत बचाई हो ।।
लपटि झपटि कटिपट कर झटकत केलि करत छबि छाई हो ।
कमला बिमला मानसजा मिलि रचना विधि प्रगटाई हो ।।
अदभुत कला केलि जल विहरे लोचन लाल लखाई हो ।।
सीताराम रसिक रस रग मग ललित बसन सजवाई हो ।।
विविधि फूल फूले कुन्जन में केलि करत मनभाई हो ।
अग्र अली तेहि वाग बिहारन सिय रघुवर सुख पाई हो ।।

श्री प्रमोद वन बिहार

देखो सखि आवत रास विहारी ।
सरयू तीर श्रृंगार विपनते अति अनूप छबि न्यारी ।।
सीताराम मनोहर जोरी चितवनि की बलिहारी ।
कुन्डल अलक हलक बुलाक की दलकत हृदय हमारी ।।
सग सखी सोहैं अलवेली बनी ठनी छबि न्यारी ।।
सुमन श्रृगार किये नख शिख लौ निज कर स्याम संवारी ।
प्रभु आगे सखि खेलति आवैं फूलन गैंद उछारी ।।
झुकि २ लेति परसपर मारत लखि अनन्द पिय प्यारी ।
आयेदम्पति राम चरण सखि सुमन श्रृंगार उतारी ।।
नख शिख मनि भूषण श्रृंगार करि सिहासन वैठारी ।
परस्पर पिय प्यारी करत श्रृंगार ।
चन्द्र मुखी अरु चन्द्रकला दोउ देत सुधार सुधार ।।
क्रीट चन्द्रिका ललित मणिन मय शिरधरि करन सुधार ।
जनुघन दामिनि ऊपर राजत रवि शशि ज्योति अपार ।।
कुण्डल करनफूल बुलाक नथ और विविध मणि हार ।
कटि किंकिन उर पदिक जटित नग नूपुर अति रवकार ।।
नील पीत अति रुचिर बसन तन पहिरे घूम घुमार ।
नटनि वेष यह सिय रघुवर को रशिक अली हार ।।
सिहासन राजत सिय रघुबीर ।
कोटिन भानु प्रकाश सिहासन कोटिन शशि सम सीर ।।
कोटि काम रति छबि निन्दन दोउ स्यामल गौर शरीर ।
मणि बहुभांति विभूषण शोभीत नील पीत पट चीर ।।
वहु सखि धूप कि युक्ति वनावहिं वहु सखिदीप सजीर ।
वहुं सखि रचि नैंवेद्य लगावहिं वहु सखि लीन्हे नीर ।।

बहु सखि मुख मज्जन पट लीन्हे बहु सखि लीन्हे वीर ।
बहु सखि छत्र ब्यजन चामर लिये बहु सखि करत समीर ।।
बहु सखि बाजन विविध बजावहि ताल देत अतिधीर ।
रामचरण सखि गौरी गावहि मधुरे स्वर गम्भीर ।।

दोहा—खोवा के सब खेल रचि—फल पल कल जल वास ।
रहसि कलेऊ कीन्ही दोउ—सखियन बुद्धि बिलास ।।

रास आरती—आरती करिये सिय बरकी, नख शिख छवि घर की ।।
मृदुतरवन में अधिकललाई, हासविलास न कछु कहिजाई,
चितवनि की छवि अति सुखदाई, मनही मन फरकी ।
नीलपीत अम्वर अतिराजै, मुखनिरखत सारदशशिलाजे ।।
तिलक झलक भालन पर भ्राजै, कुम २ केशर की ।।
कर्णफूल कुण्डल हलकत है, चन्द्र हार मोती झलकत हैं,
कर कंकण की छवि चमकत है, जगमग दिनकरकी ।।
सिंहासन पर चंवरढुरत है, झांझवजत जै जै उचरत है,
सादर अस्तुति वेद करत हैं, लुटरनि अनुचर की ।।

श्री अग्रपद (६०) जय २ श्री बन प्रमोद रसिकन सुखदाई ।
सरयुतीर दिव्य भूमि वेलिलता रहि झूमि फूलन प्रति भंवरा अति गुन्जतमनभाई ।।
कुन्ज२प्रति अनूप विलसत तहँ युगल रूप जनक लली रघुनन्दन मधुर २ ताई ।।
चन्द्र कला विजयादि नागरी नवीनी अति मधुरयन्त्र लीन्हे कोउ सप्त स्वरजमाइ।।
गावहि सब दिव्य तान सुनहि लाल अतिपुजान रास सरस भीज मन्द२मुसुकाई ।।
अग्र अली विपिन राज यह सुख तहं नित समाज—
जानत कोई रसि कभेद जिन यह सर पाई ।।

श्री अग्रपद (६१) रागधनीं श्री नामो जानकी जगत मनि रूप कमनी ।
वदन विधु रुचिर रद हाशईपद सुखद राम हृदकामकी नाप समनी ।।
नमो सुक नासिका नैन मृग मीन छवि भालभर भाग सौभाग्य दरसै ।
प्रेम पूरित वैन अलक इक उर ऐन सहज अलवेलि पिय मनहि करषै ।।
कण्ठ सु कपोतिनी उरजउत्तंगिनी सिंह मधि देश सम श्रोणि सौहै ।
जघ कदली कर्भ गर्भ गति हरति इभु अदुति नख चन्द्र उपमा न कोहै ।।
विशद सतकुम्भ सम भाति आभा वपुष मनिखचित विविध भूषननि धारी ।
व्यालि वेनी दण्ड अंग दीपति चंण्ड सुभगता सनिरही राम प्यारी ।।
भरत संगीत गन्धर्व कला, कोक निधि सुधरवर नारि सब शीष नावै ।
रुद्र ब्रह्मादि कवि अवर केते कहौं स्वामिनी अग्र नहि पार पावै ।।

श्री अग्रपद (६२) जय जय रघुनन्द चन्द रसिक राज प्यारे ॥
अंग २ छवि अनग कोटि वारि डारे ।
विहरत नित सरयु तीर संग सोहे सखिन भीर—
सिया अंश भुजा मेलि अवध के दुलारे ॥
कोई सखि छत्र लिये व्यजन लिये कोई—
युगल सखि चांवर लिये करत प्राण वारे ।
सुन्दर सुकुमार गात पुष्पमाल सकुच जात परसत-
भयभित होत रूप के उज्यारे ॥
नख शिख भूषण अनूप यथा योग यथा रूप—
कोटि चन्द्र कोटि भानु निरखत दुति हारे ।
मन्द २ मसुकुरात प्यारी संग करत बात देखि२
अग्रअली तन मन धनवारे ।
शरद पूर्ण बिमल चन्द विमल महि अनन्द कन्द—
राम चन्द्र रास रच्यो देखन सखि धाई ।
सरयु पुलिन विनल कूल फूले बहु रंग फूल कमल—
चम्प केतकी कदम्ब सुरभी छाई ॥
वोलहि सारो मयूर कोकिला मराल किर गूंजहि—
अलिसकल राग रागिनि बनाइ ।
किन्नरि अप्पसरा गान मुर्छन स्वर ताल तान धरहि-
भूमि तरुन लतन नीर गगन जाई ॥
बाजहि मृदँग जंग सारँगी तमूर चंग वीण वेणु—
आदिक स्वर तालगति सुहाई ॥
युग युग सखि बीच एक मध्य राम नृत्यत संगीत-
ताण्डवी सुढंग गति अनेक ल्याई । गावहि षट--
रामराम रागिनि स्वर ताल ग्राम सबधरि सखिरूप-
राम रास हेतु आई ।
जानकि रघुनन्दन मन भावित भै रैनि ब्रह्म—
रामचरण सर्व जीव परमानन्द पाई ॥
देखो सखि अति अनन्द रास रच्यो रामचन्द्र—
रजनी छवि छिटकि रही शारद चन्दनी ।
बहुसखि मण्डला कार नृत्य गान स्वर सम्हार नृत्यत-
रघुनन्दन मिथिलेश नन्दनी ॥
कंचन मनि लसत भूमि नृत्यत पग चपल घुमि—
नूपुर छम छनन छमक छमक छन्दनी ।
कमला विमलादि तान राग अनुगादि गान करहि-
राग रागिणी कला कलन्दनी ॥
चन्द्रकला वीणा मूर्चंग धुनि मृदंग मधुर अपर सखि
सितार तार तार तरंगिनी ।

ताधिग धिग धिग ताधिग धिग २ ताधिन्ता धिन्धुक्ट-
धुक्ट धिधि कट धिधिकट प्रवन्धनी ।।
उघटत संगीत राग ताल मुर्छनादिग्राम हाव भाव पानि-
मुरती नन खजनी ।
रामचरण युत समाज मेरे हिय में विराज यह विहार
नित अखण्ड रसिक मण्डनी ।

श्री अग्रपद (६३) सखिन बिच नृत्यत युगल किशोर ।।
बिपिन प्रमोद सरोजा तटपर दिव्य भूमि चमकत चहुं ओर ।
चक्राकार रास मण्डल रचि राग रागिणी के कलशोर ।।
विमला चन्द्रकलादि रंगिली बीण मृदंग लिये करधोर ।
चारुशिला शुभगा हेमा लिये मुरलि मुचग किन्नरी जोर ।।
चन्द्रा चन्द्रवती मिलि गावति क्षेमा स्वरहि भरत रसबोर ।
मदनकला करताल वजावति सारंगी नन्दा टकोर ।।
पियशिर शुभग मुक्रीट विराजै चन्द्रिका सीता के शिर रोर ।
चन्द्रहार प्यारी उर चमकत पिय उर मोतिन माल उजोर ।।
कोटि २ रति काम विमोहन नटवर वेष श्याम अरु गोर ।
रुप माधुरी कहिन परत हैं अंग २ छवि के उठत हिलोर ।।
कर से कर दोऊ मिलिधारे नयनन शैन चलत दुहुं ओर ।
कबहुं अधररस पियतपरसपर रस मतवारे दोउचितचोर ।।
प्यारीहाव पियामन करसत पिय केभाव प्यारी निज ओर ।
दोउ रस सिन्धु मगन रस लम्पट अग्रअली नहि चाहत भोर ।।

झमकि २ ललि लाल कि नटनियां ।
निरखि २ अलि हिय कसकनियां ।।

बाजत मृदक बींण सारंगी तमूर झीन अलगोंजा वंशी—
वाजै वाजत पैंजनियां ।
मृगो नाचै चन्द पर शेष नाचै शम्भू पर कवि नाचै बिम्ब—
पर मनके हरनियां ।।
कर सोह कर धरे थिरकि २ अलि ताताथेई२ ताथेईकहनियां।
नवल अली की लली बन्धकि वंधनियां रसिक शिरोमणि—
सोरस कि पियनियां ।।

श्री अग्रपद (६४) प्रीतम का गान प्यारी तेरे नयना मदनसर वारी ।
रतनारी कारी कजरारी चन्द्र वदन पर अति छवि धारी ।
चितबनि बांकी तिरछी प्यारी ममहिय के घायल करि डारी।
मीन कमल खंजन दुति हारि सव विधि प्राण अधारहमारी।।
हंसनि नटनि अरु अंग मरोरनि देखि २ में जाउ बलिहारी ।
रुप उजागरि अग्र तियन में हौ तुम श्री मिथलेश दुलारी ।।

श्री अग्रपद (६५) प्यारी का गान प्यारे मुखचन्द विलोकहु सजनी ।
क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल नयन कमल दल अति छवि छत्रनी।

नाशामणि सु अधर पर राजत मनहूं कमल दल शुक्र उदवनी ।
कल कपोल पर अलकै खूटै चन्द उपरमत्र वशि बहु अहिनी ॥
कटि कछनी काछे वने आछे पग में नूपुर अति मन हरनी ।
मुरनि दुरनि अरु हंसनि नटनि में कोटिन काम करों निवछवनी ।
रूप उजागर अग्र स्वामि मेरे मम हिय के है प्राण सुजिवनी ॥

श्री अग्र पद ६६—सखी का गाना— रागकल्याण वलिहारी सीता बदन की ।
उज्वल अरुण परस्पर दीपति अधर विम्बफल रदन की ॥
वेशर मुक्ता चपलहोत अति शोभा बीरी अदन की ।
लोचन चारु चितै मधुवर्षत राम काम दुख कदन की ॥
सची सहित शोभा त्रिभुवन को बारों भामिनि मदन की ।
अग्र स्वामिनी विशद चन्द्र मुख सौभग हद् सुख सदन की ॥

प्यारी का गान

लाल तुम कर धरि बीण बजावो मै भरि कण्ट अलाप—
रूचारों तुम स्वर संग मिलाओ ।
मै प्यारी कहि गाऊं तुमको तुम प्रीतम कहि गावो ।
मैं रघुनन्दन नाम धरों निज तुम सिय प्यारी कहावो ॥
कटि लहगा शिर धारि चन्द्रिका मोहि कछु नाच दिखाओ।
मैं करताल वजाउ रंग भरि तुम हंसि हाव दिखाओ ॥
मैं करजोरि मनाऊं तुमको तुम कसि भौंह खिसाओ ।
मैं सौन्दर्य सराहि परों पग तुम हंसी कण्ठ लगाओ ॥

श्री अग्रपद (६७) आकरष्यो जहं तहं नर नारी ।
सव सखियन मन पिय अंग धारीकरों मनोरथ रुचि अनुसारी ॥
सबके रुचि लखिके सिय प्रीतम धार चो बहुत रुप मनहारी ।
जस २ जाहि मनोरथ रहेऊ तस तस करि सव कियो सुखारी ॥
अस्थावर जंगम जो जहं लौं आनन्द मुरछा में नर नारी ।
अद्भुत रास रच्योपिय प्यारी संग सखिन लिये अग्र दुलारी ॥

श्री अग्रपद ६८ रसिक दोऊ सरयू कूल चले—
रास श्रमित ह्वै संग सखिन लै दम्पति दियभुजगले करन—
लगे जलकेलि विविध विधि दोऊ रस रंग रले ॥
प्रीतम डूवि प्रिया पद गहिके ऐंचि लेत जल तले ।
प्यारी कर कमलन ताडन करि जल पिये आंखि दले ॥
प्रीतम के गति भूली गये सब दोउ कर आंखि मले ।
काहू के कटि बसन छोडि पिय तट पर आय चले ॥
वह सखि ने अति लाज श्रमित है जल से नहि निकले ।
पुनि सिय ने पिय से पट लैके दइ सखि हाथ तले ॥
करि जल केलि प्रिया प्रीतम दोउ जल से आय थले ।
करि शृंगार अग्र सखियन युत आय गये महले ॥

श्री अशोक वन

श्री अग्रपद ६६ श्री सरयू तट बन अशोक मधि रास रच्यो श्री अवध बिहारी।
चहूं दिशि मणिमय कोट बिराजै मध्य कुंज बहु न्यारी न्यारी॥
ताके चहुं दिशि पादप राजैं त्रै सम्पति युत अति रुचि कारी।
ता आगे वहु लता कुंज है जाति २ के न्यारी न्यारी॥
ताके चहुं दिशि कृत्रिम पादप जाति २ मणि के छवि कारी।
ताके चहुं दिशी गमले सुन्दर बहुत भांति के धरचो सुधारी॥
ताके चाहुदिसि मोतिन झालर मध्य में रचना बहुत प्रकारी।
मध्यभूमि बहुरंग मणिन के वेली बुटी विविधि प्रकारी॥
तापर जाजिम स्वेत विछे हैं चन्द्र किरनि के अति छविहारी।
तामधि सिंहासन अतिसुन्दर स्वेत मणिनमय अति सुठिकारी॥
ता पर बैठे युगल विहारी श्रीनृपनन्दन जनक दुलारी।
गौरस्याम छवि को कबि बरणै ,कोटिकाम रतिदुतिलखिहारी॥
प्यारी के तन सुभ्र सुसारी प्यारे अंग जामा झलकारी।
प्यारे उर मोतिन की माला चन्द्र हार सोहत उर प्यारी॥
कण्ठ पोत प्यारी गल राजत पिय गल गोप विचित्र सँवारी।
बाहुन में अंगद सुठि सोहैं कर में पहूंची अति दुति कारी॥
कर्ण फूल प्यारी श्रुति शोभित पिय श्रुति कुण्डल मकरा कारी।
प्यारि के शिर मणिन चन्द्रिका पिय शिर क्रीट भानुमदहारी॥
बिमलादिक सखि चहुं दिशि सोहैं मध्य नटनलागे पिय प्यारी।
कोई सखि बीणा मुचंग काहू लिये जलज तमूरा कोई २ धारी॥
बहुत सखी लिये वहुत यंत्र हैं थेई २ कर नाचत बहु नारि।
छम २ नूपुर चरनन बाजै मनुमोहनी मंत्र ध्वनि कारी।
मावति सब रागन रागिनि में स्वर सुनि इन्द्र बधू मनहारी॥
जब प्यारी प्रीतम मिलि गावत ताथेई २ औरन प्यारी।
स्वर्गसात पात।ल व्यापि गयो परमानन्द के वह्यो पनारी॥
महारास सब दिशि में छायो आकरष्यो जहं तहं नर नारी।
सब सखियन मन पिय अंगधारी करां मनोरथ रुचि अनुसारी॥
सब के रुचि लखि के प्रिया प्रितम धारयो बहुत रूप मनहारी।
जस २ जाहि मनोरथ रहेउ तस २ करि सब कियो सुखारी॥
अस्थावर जंगम जो जंहलों आनन्द मुरछा में नरनारी।
अद्भुत रास रच्यो पिय प्यारी संग सखिन लिये अग्र दुलारी॥
आज सखी लखु रास मण्डल में नृत्यत हें रसरंग भरे।
बन अशोक सम भूमि खचित मणि रवि शशि अमित प्रकाशकरे।
श्री रघुनन्दन जनकनणदनी अमित मदन छबि अंग धरे।
क्रीट मुकुट चन्द्रिका मनोहर भूषण अंग २ नगन जरे॥
कुण्डल मकर हार मोतिन के वैजन्ती बन माल गरे।

नाशा मणि झूलत अधरन पर केशर चन्दन खौर करे ।।
मोतिन मांग भरी वर वेनी कुटिल अकल जनु भ्रमर खरे ।
मणि कंकण पहुंची कर चूरी बाजू बन्द जराउ जरे ।।
नीलपीत पट लसत दोउन अंग स्याम गोर मिलि लगत हरे ।
किंकिनि मुखर अरुण कर पल्लव पग नूपुर झन कार करे ।।
थेइ २ करत भरत स्वर अलिगन निरतत पिय संगअनंदभरे–
वजत मृदंक ढोल सारंगी झांझ मजीरा वीन वरे ।।
युग २ सखिन बीच रघुनन्दन करसों कर धरि लसत खरे ।
करि मण्डल निरतत सखियन संगनिरखि मदन बहु मुरछि परे ।।
पूरि रह्यो वन मण्डल सोरस अचर सचर चर अचर करे ।
सुर मुनि अगम सुगम रसिकन को रसमाला यह ध्यान धरे ।।
सांवरे सलोने जु झमकि झुकि आवैरे ।
सरद कि रैन पिया अधिक सुहावैरे ।।
मन्द मुसुकाय प्यारी जू के गल वांह दिये,
उंचेस्वर तान ले मधुर स्वर गावैरे ।
रहस मण्डल आली संग लली कर धरि,
छम २ छननन नूपुर बजावैरे ।।
कटि लच कनि ग्रीव मुरनि धुरनि नैन,
कुराडल हलन मनि क्रीट झलकावैरे ।
नवल बिहारी प्रिया लली संग रस बस,
अलि संग लता कुन्ज मन ललचावैरे ।।

नटत सियाजू पिया लेत बलि हरिया ।
छम छम छमकत नूपुर बाजत पिय,
मन मोहति कहतहरि हरिया ।।
चम्प फूल पर घन सोहत छवि,
तापर नखत दामिनि फुलझरिया ।
लेत तान जब प्यारी नइ नइ,
बाह २ कहत पिया जु स्वरभरिया ।।
नवल बिहारी पिया विरिया खिलावत,
जय २ कहत सखिन मन हरिया ।

नटत छबीलै छैला सिया मन हरिया ।
जब घूमत पिय बागा फहरत,
सियामन कहरत मदन लहरिया ।।
कम्पत चलत पसेवनि अंसुवा,
उमगत मनहु सावन कि नहरिया ।।

गिरि २ लेत पिय तान अलापत,
मुरछि परत सखिसिय थर हरिया ॥
नवल विहारी प्रिया पिय रस लूटत,
प्यारी पर छिरकत चन्दन फुहरिया ।

नटत छवीले छैला सिय मन हरिया ॥
जब पिया घूमत बागा फहरत,
सियामन कहरत मदन लहरिया ।
कम्पत चलत परसेवनि अँसुवा-
उमगत महु सावन कि लहरिया ॥
गिरी २ लेत पिय तान अलापत-
मुरछि परत सखि सिय थर हरिया ।
नवल विहारि प्रिया पिय रस लूटत-
प्यारी पर छिरकत चन्दन फुहरिया ॥

आज जनक दुलारी रसरंगन भरी ।
चम्प के बरनवारी वसन सुरंग वारी-
वदन मयंक वारी रूप अगरो ॥
अरुण अधर वारी बोलनिमधुर वारी-
तिरछि चितौनी सर मारति खरी ॥
वेसर सुपास वारि भुजन मृणाल वारी-
उरज उत्तगवारी मदन जरी ॥
मोतिन के हारवारी मध्य छीण बाग वारी ॥-
जघन गम्भीर वारी भावन भरी ।
गमन मराल वारी नूपुर झनकार वारी रसमाला
उर वारी मह्यो मन री ॥

जाजवन्ती दादरा-

कित गयो मेरि आली रास को रमैया ॥
सांवरो छविलो छैलामेली २ कण्ठभुज,
मीठी २ वातैं-कहि हिय को हरैया ।
एक सखि आगे २ आप वाके पाछे २-
कुंजन प्रवेश कीनो हमहुं लखैया ॥
माइ बाप गौरे २ भाई वाके गौरे २-
आप कारो २ वारो फन ज्यों डसैया ।
मोको तो नसूझै कछु बूझै न विकल भई,
सावरे की छवि हिय विच करकैया ॥
आंसुवन भीजै मेरी अंगिया उतारो सखि,

हार को बहाबो कहा सुख के देवैया।
तियन पिकल जानि आये अघुलाल पिया,
डूबत बिरह वारी पाये सुखनैया ॥
आरति उतारै सखिबारै तन मन धन,
जनक लडैती संग राजै मुद छैया।
कोउभरि अंक कोउ बदन भयंक लखि,
कोउतिय कहैं पिय बड़े निठुरैया ॥
रसिक अलि के प्रान प्यारे रघुलाल सिया—
खेलत नवल रास मण्डप दिपैया ॥
पिया हिय। लागि रहो न्यारे जनि जाउरे ॥
गुरुजन के लाज काज हेरो जनि भोरे पिया–
सुमन के सेज सिया रस वश छाउरे।
पइयां परों तोहि मैं तो निशिपति निशदिन–
राकायुत नित हित अबध शाउरे ॥
कुल गुरु नीत हम पूजन सु करि हैं–
उदैजनि होउ में तो दुःख हियापाउरे।
नवल बिहारी पिया बिछुरत संग प्यारी–
मरनोसो भलो जिया जनि तड़फाउरे ॥
कर धरि सिया नटै पिया मुख हेरि हेरि।
चहुं दिशि अलिगन छम छम छमकत मन्द मुसुकनि में
मदन रस भरि भरि ॥
फहरत बसन सुगन्ध छहरत अति
तोती माला टटत सखिन उर वेरि वेरि।
उरज गहत कर अधर चूमत जब
पूचत रसीली बातै आली मुख हेरि हेरि ॥
नवल बिहारी प्रिया नूपुर के सोर सुनि,
पिय रस लूटत बांधत बन्ध वेरि बेरि।
धिधि केटे धिधि केटे बाजत मृदंग ॥
स्वरनि भरत उघटन तेथे तत्ता थेई,
लाग डाट सम तान तरंग।
चारनि चरनि उर भावनि,
दृग मोरनि तस चलनि उमंग (सुअंग) ॥
रसिक अली रघुबीर सांवरो,
नटत अटत मुनि उरनि अनंग।
राग परज—राजदुलारी रस में रोस न कीजै।
बदन सरोज नवल रिस कीन्हें, कला, उन लखि लीजै ॥
अमित कला वर वदन सांवरो चन्द्र, हंसनि कत दीजै।
रसिकअली प्यारी रघुवर की, हंसि प्यारो रस भीजै ॥

दोहा--धन्य चारुशीला अली चतुराई की खान ।
पिय प्यारी की प्रान सी तुरत छुड़ायो मान ॥
रीझि रहे राघव हिये तनमन अर्प्यो तोहि ।
ताते पद गहि रसिक अली नित्य समाज समोहि ॥
दिन २ दिन रस बढयो रीति अलि जानि पियाकी ।
तेरे बश पिय भये हो श्रीचारुशीलाजू ॥
सब रस ऐनी आहि झपटि पिय राम मिलाजू ।
मिले राम पिय सत्य अब शंशय मन मति राखु ॥
रसिकअली की स्वामिनि बुद्धी, बानि सुभाषु ।

श्री अग्रपद ७० मूदत नैंन राम सीता के चन्दा तन चितवन नहि देत ।
मागै जो वल्लभा मृगन को सारंगधर सकुचत यहि हेत ॥
प्रिया वचन उल्लंघ सकै नहि उडुपति हते प्रलै ह्वै जाय ।
दोऊ कठिन जानि रघुनन्दन हांसी मिस यह रच्यो उपाय॥
जाचै जो जानकी कदाचित इन्दु कुरंग वेगि देउं आनि ।
अति आधीन जनावत तिय के अग्र स्वामि याते यहमानि ॥

श्री अग्रपद ७१ रूठो जी राम गुशांइ भले २ ।
पायो राजपाट दशरथ को गहि लीनी ठकुराइ ॥
जाय कहू मिथिलेश ललोजु से, निकश जाय गुमडाइ ।
अग्रअली के शिर पर चहिये श्री शिरध्वज की वाइ ।

कवित्त– जाय कहूं मिथिलेश लली से आज अवै निकसै गुमडाई ।
भोर सुभाय सुनैगिजबै मन मान ले ऐंठि छिपैं कहुं जाई।
मेंरे बिना फिर मान टरै नहि कोटि करो पिययों चतुराई।
ताते कहू अबहूं सुनि लो सोंन्दर्य गुमान किये न भलाई ।

दोहा---प्यारी तू प्यारी अहैं सुधर सुधारी रूप ।
मोते बोलि न आब अब परों प्रेम तव कूप ॥
रसिकअली पिय उर लगी प्रीतम लई लगाइ ।
गये अपनपौ भूलि दोउ या तो प्रेम सुभाइ ॥

रसिक दोउ नृत्यत रंग भरे ॥
विपिन अशोक रास मण्डल बिच,
जनक लली रघुलाल हरे ॥
अमित रूप धरि करि कछु चेटक
युग युग तिय मधि श्याम अरे ।
क्रीट मुकुट की लटकि चन्द्रिका
झुकनि मदन मद दूर करे ॥
मोंतिन हार युगल उर राजत कुन्द मालती माल गरे ।
पग नूपुर मजीरमधुर धुनि कंकन किंकिनि मुखर तरे ॥
मुरज मजीरा ढोल सारंगी अरु मुरली के टेर करे ।

विविधि ताल संगीत अलापत ततथेइ २ कहत खरे ।।
कबहूं मधुर मुसुकाय के दम्पति निरखत छवि भजग्रंशधरे।
कबहूं सुरति करि व्याह समयकी फिरति भांवरीरसिक वरे।।
यह रस रास महासुख सागर द्वादश योजन लो सवरे ।
रसमाला भरि पूरि रही वन जग कोइ बुन्द प्रकाश करे ।।

अवधपुर महिमा

देखत अवध को आनन्द ।
हरषि वरषत सुमन दिन २ देवतनि कों वृन्द ।।
नगर रचनाशिखन को विधि तकत वहु विधिबन्द ।
निपट लागत अगम ज्यों जल चरहि गमन सुछन्द ।।
मुदित पुर लोगनि सराहत निरखि सुखमाकन्द ।
जिन्हके सुअलि चख पियत राम मुखारविन्दमरन्द।।
मध्य व्योम विलम्बि चलत दिनेश उडुगण चन्द ।
रामपुरी बिलोकि "तुलसी" मिटत सब दुख द्वन्द ।।

विवाह लीला विहार

दोहा—लीला विविध विनोद मे, पुरुष रूप सखि कीन्ह ।
जेहि सेवा में जश चरित, तशकरि प्रिय सुख दीन्ह।।

श्री अग्रपद ७२ प्रभु जी हमको आज्ञा दीजै ।
यज्ञ पूर भयो पुण्य तुम्हारो नृप को दर्शन कीजै ।।
सुनहु आज मिथिला पुर तें इक आयो है परचारी ।
सीय स्वयम्बर अखिलनरे श्वर कौतुक ह्वै है भारी ।।
पंगति रथ ए है पुनि वहु तहं ह्वैं है बडो समाज ।
अग्रस्वामि दोउ हंसत कुंवर बर संग चले ऋषिराज।।

श्री अग्रपद ७३ सखि में सपनो सुन्दर पायो ।
इन्दु वदन राजिव दल लोचन गाधि सुवन संग आयो ।।
स्माम वरन तन कोटि भानु दुति शोभा सब जग छायो ।
मोद भयो मिथिलापुर बासी मो मन अधिक सिरायो ।।
रघुकुल कुवर अयोध्या नायक भुजबल धनुष चढ़ायो ।
नृप सब सभा ठगी सी ठाडी गर्मिन गर्भ नशाओ ।।
पूरण भयो पिता प्रणमम सखि सब सन्देह नशायो ।
अग्र स्वामि अरविन्द बन्धु उदै मिलि है पति मन भायो।।

श्री अग्रपद ७४ रागमारू अरी हो राम रग रची ।
तात हमारो पन कियो तोरन घनप कठोर ।।
कोमल करतल सांवरो सखि मूरति मधुर किशोर ।
राजशभा ऐसे भई ज्यों उडूगनमें चन्द ।।

विधना विधिसो निर्मयो अलि मोहन मनको फन्द ।
लोक वेद की लाज सखीरी यद्यपि दुस्तर आहि ।।
रूप निधान देखि रघुनन्दन धीरज धीरज नाहि ।
ऐसी मो जिय उपजीरी चाप चढ़ाओ कोइ ।
अग्र स्वामि के हाथ बिकानी होनी होय सो होइ ।।

श्री अग्रपद ७५ रागमारु सखी मोहि राम रूप भावै ।
नृपति निकर निरस सब लागै कोउ दृष्टि न आवै ।।
उडूगन उदये होत ज्यों आली चकोरी चैन न पावै ।
एकहि अमृत श्राव उदये ते चन्दा तपनि बुझावै ।।
राजा बन राजी से लागत पोरुष नहि दर्शावै ।।
रघुनन्दन चन्दन द्रुम मानों अन्तर जरन जुडावै ।।
भावै नही पितापन सजनी सारंग पानी सुहावै ।
अग्र स्वामि मोहनी मन्त्र लिये चितवत चितहिचुरावै।।

श्री अग्रपद ७६ रामकान्हरौ तात प्रन काहे को कियो ।
कठिन पिनाक रामकर कोमल धीर न धरत हियो ।।
मधुर मूर्ति आनन्द कन्द सम नाहिन और वियो।
वक्र चितवनी सांवरे सखि चित बित चोर लियो ।।
रघुपति तजि जे करै आन रति धिग २ जीव जियो ।
अग्र स्वामिरस वश भइ आली मो मन मोललीयो ।।

श्री अग्रपद ७७ होरीताल–येरी मै हूंगी अनुरागि चरण की ।।
अंकुश कुलिश कमलध्वज चिन्हित अरुण वरण अध–
तिमिर हरणकी ।
जो पद परसि सरस दुर्लभगति होतभई ऋषिराज धरणिकी।।
नूपुरनदन मदन सुनि लज्जित राजत जीवन रसिकजननकी ।
अग्रअली सोइसुभग सरोरुहनखत कान्ति मणि माणिकबरन।।

श्री अग्रपद ७८ सौमित्रीकहे सुनहु श्याम घन, हूं जानत वदेही को पन ।।
राजन कीयह रीति वाम बहु दाशन लिखि नहि आवै ।
यह डर निडर जानकी रघुपति रामहि ह्यदे बसावै ।।
राजिव नैन अनुज के वैन सुनि ताको यश सब जान्यो ।
यक पतनी व्रत लियो रीझि कै अग्र भूमि धरिपान्यौ ।।

श्री अग्रपद ७९ जब रघुपति कर धनुष उठायो ।
पुलकित तन रोमाञ्च गाधि सुत पुरति प्रेम भरि आयो ।।
को बड़ नमिन न मुख भूपति कर जानकिमन तरसायो ।।
तोरयो चाप सभा में तिहि क्षिणि संशय सवै नशायो ।
मगन शब्द सुनि जामदग्नि मन अहंकार सुवहायो ।
तोषे अमर अवनिजनु फनिपति अग्रदास मनभायो ।

राजति राम जानकी जोरी ।
स्याम सरोज जलद सुन्दर वर दुलहिनि तड़ित वरन तनु गौरी ।।
ब्याह समय सोहति वितान तर उपमा कहुं न लहति मति मोरी ।
मनहु मदन मंजुल मण्डप महँ छवि शृंगार शोभा इक ठोरी ।।
मंगलमय दोउ अंग मनोहर ग्रथित चूनरी पीत पिछोरी ।
कनक कलश कहँ देत भांवरी निरखि रूप शारद भई भोरी ।।
इत वशिष्ट मुनि उतहि सतानन्द वंश बखान करै दौउ जोरी ।
इत अवधेश उतहि मिथिला पति भरत अंक सुखसिन्धु हिलोरी ।।
मुदित जनक रनिवास रहस वश चतुर नारि चितवहि तृन तोरी ।
मान निशान वेद ध्वनि सुनि सुर बरषत सुमन हर्ष कह कोरी ।।
नैनन को फल पाइ प्रेम बस सकल आशीशत ईश निहोरी ।
"तुलसी" जेहि आनन्द मगन मन क्यों रसना बरनै सूख सोरी ।।

पाणिग्रहण

श्री अग्रपद (८०) मंगल आज जनकपुर माही ।
पाणिग्रहण सीता रघुपति को नरनारी सब फि न उछाही ।।
मण्डित द्वार चौहटा बीथिन दिव्य दुकूलनि धाम उछारै ।
अति आतुर पग लागत न अवनी कहु गज कहु रथ अश्व शृंगारे ।।
शीश सेहरो रामचन्द्र के अग वानी करि तोरन लाये ।
रुक्म पुहुप मुक्ता ले गोखनि नबल वधू अंजलि वरषाये ।।
मण्डप तर बैठाय पटा दोउ वेद बिहित सब कर्म कराये ।
साखोंच्चार दुहुं कुल गुरु करि कुंवरि कुंवर को हाथ गहाये ।।
उतरासन की ग्रन्थि परस्पर दृढ़ वचननि बामैं अंग लीन्ही ।
आगे प्यारी पीछे प्रीतम जातवेद कल भांवरि दीन्ही ।।
भूरि दान दे तोषि सकल सुर दुलहिनि संग भीतर बैठाने ।
परदा ओट समागम पहिली "अग्रदास' दासी सुख जानैं ।।

दुलह राम सिया दुलहीरी
घन दामिनि वर वरन हरन मन सुन्दरता नख सिख निवहीरी ।।
ब्याह बिभूषण वसन बिभूषित सखि अवलि लखि ठगि सिरहीरी ।
जीवन जन्म लाहु लोचन फल है इतनोइ लह्यो आज सहीरी ।।
सुखमा सुरभि शृंगार क्षीर दुहि मथन अमिय भय कियो है दहीरी ।
मथि माखन सियराम संवारे सकल भुवन छवि मकहु महीरी ।।
तुलसीदास जोरी देखत सुख शोखा अतुल न जात कहीरी ।
रूप राशि विरची विरचो मनो शिला लवनि रति काम लहीरी ।।
शोभित सीताराम कनक मण्डप तरे ।
शिर सोहैं सोने को मौर मञ्जु मुक्ता जरे ।।
परसत अमल कपोल सुमुक्ता कोर के ।

राजिवलोचन लोल कमल मानो भोर कें।
सुरंग चूनरी के निकट पीत पट छुई रह्यो।
मनहु अरुन घन मध्य चपलता चुई रह्यो।।
सिय भूषण प्रतिबिम्ब राम छबि उर धरे।
मनहु जमुन जल मध्य दीप दीपक वरे।।
राम भुजा के निकट सीय भुज यों लसै।
मरकत मनिकर खम्भ मनहु कंचन कसे।।
राम भये घन श्याम सिया भइ दामिनि।
मुनि भये चन्द चकोर चकित भइ भामिनी।।
राम भये तन गौर सिया भइ सांवरी।
सारद सी बुद्धि वन्त वधू भइ बावरी।।
पुष्पन बर्षत मेघ मेदनी थर हरे।
होत जनकपुर ब्याह राम भांबरी फिरे।।
राम सिया को ध्यान सदा शंकर धरे।
ब्रह्मा रूप निहार इन्द्र पूजा करे।।
यह छबि युगल किशोर सुमुनि जन ध्यावहि।
लखि लखि बिमल विनोद वेद यश गावही।।
तुलसी सीताराम सदा उर आनि थे।
राम भजन बिन जन्म वृथा करि मानिये।।
गोरी किशोरी दुलहिया हे दुल्हा राघो जि स्याम।
देखे के पँवलो सँजोगवा हे बशि के येहि गाम।।
लाली ललीकी चुनरिया हे अंग ललित ललाम।
कटि में कसे वे केशरिया हे कोरन जरिकाम।।
मौरी मणिन इन धरिया हे सिन्दूर सुख धाम।
उन शीर टेडी बगडिया हे मौर मोतिन दाम।।
दोऊ कि दोउ नजरिया हे हिय करै कतलाम।।
कोन इन्हें लखि सखिया हे बिकिगै बिनु दाम।।
प्रेमी जनों के पियरवा हे सन्तन विसराम।
मोद बशाले हिरवाहे मुख दम्पति नाम।।

श्री कोहवर बिहार

श्री अग्र पद ८१

रागकल्याण—लाल भयो रोमांञ्च प्रिया को आगम जान्यो।
अनगरौर गये दौरि अजिर में
अति आतुर ह्वै अंग राम पहिचान्यो।।
मेंघागम ज्यो नृत्य कलापी नूपुर धुनिमन मान्यो।
सुख समाज सो मिली अग्र प्रभु तन मन एकता सान्यों।।

श्री अग्र पद ८२

हिम ऋतु हर्म गर्म मनि को है।
कीम खाप मखमल गिलमन्ह पर सिय पिय परिकर सोहै ॥
लै कोउ बीण प्रवीण सहचरी राग तरंग उमगो है ।
अग्र स्वामि सुख निधि सीता पति रमि रमाय मन मोहै ॥

श्री अग्र पद ८३

तरुन तमाल वरन रघुबीर, जानकि कंचन की लता।
सौ दामिन नव घन संग मानहूं पुलकित प्रेम मता ॥
निरखत रेख जम्बुनद जैसे दोऊ रंग रता ।
अग्र अली सीतापति शोभा को करि सकै अता ॥

श्री अग्र पद ८४

भूषण मन में नाहिन भावत।
सीत भीत पीय अंग परषत ऋषि पतनी की सुधि जब आवत ॥
जम्बूनद गुहि असित पाट सों नाना भातिन स्वकर बनावत।
कुसुम कटाव कंचुकी सारी कुंकम कुचन सु दोष जनावत ॥
पद्म पानि पद चित्र महावर पांति तम्बूल कज्जल छवि पावत।
सहज सुभग वैदे ही अंग २ अग्र स्वामि यहि भांति रिझावत ॥

कलेऊ बिहार

रघुबर जेवत जानि एक सखि अँचल दै हंसि बोली जू।
सुनहु लाल तुम काके जाये सत्य कहो सब खोली जू ॥
सुनहु प्रिया हम नृप दशरथ के जासु सुयश श्रुति गावै जू।
भूपति गौर स्याम तुम लालन हम कैसे पतियावै जू ॥
सुनहु चतुरि हम स्याम न होते को श्रृंगार रस ज्यावै जू।
हमरे श्री जनकललो रस की रस बिन बोले पिय आये जू ॥
कहहू कमल मकरन्द मधुर हित भँवरहि कौन बुलावै जू।
रामचरण सुनि मरम मधूर रस सब सखियां मुसुकावै जू ॥
सुनिये श्रीरसिकराय रघुनन्दन रीति प्रीति रसमारी जू।
तुम तो स्याम स्वामिनि मम गौरी यह अचरज अति भारी जू ॥
जो पै लाल आप रुचि होवै तौ हम बात बिचारी जू।
कछक काल मिथिला में रहिये होई नागरी सुकुमारि जू ॥
श्री लक्ष्मिनिधि के महलो में रहिहौ रूप उज्यारी जू।
मन भावती टहल प्रभु करिहौ श्रीसिद्धि की अनुहारी जू ॥
तव प्रभु गौर बदन तुम पैहौं सियस्वामिनि अनुहारी जू।
हंसि २ कहत परस्पर दम्पति कामदेन्द्र बलिहारी जू ॥
तुम सकुचत कश चित चोर दुलहा राम लला।
जेंवो व्यंजन रुचिर हमारो व्यंग बचन मुनिमोर।

तुम तो स्याम काम छबि लाजै मातु पिता कैसे गौर ।।
गारि ससुर पुर सुनि रघुनन्दन हँसै सु लखि मुखमोर।
कृपा निवाश हरषि सखि गावै जुरि२सिया जुकि ओर ।

राम में छवो रसन कि छटा ।

बचन मधुर अरुमाधुरि मूरति तुव रवि रस कोजटा ।।
रुचि कारक लावण्य लवण रस तीष तेज रिपुडटा ।
वाहर भीतर अमल करत जो इहै अमल रस ठटा ।।
प्रभुयश तीत अभागी नाही कोहै अति अटपटा ।
जैसे मधु में सब रस छाये मधु अमृत से सटा ।।
"मधुवाता' इति श्रुति में सोमधु बहुत भांति से बटा ।
रस से मोद मोद से जीवन मह रसिकन अश अटा ।।
महादेव नीके जानत जिन राम राम नित रटा ।

अचवन करत राम सिय प्यारी ।

स्यामा पान लिये कर ठाढ़ी रामा लिये जल भारी ।।
चद्रवती खर्चा दर्पण लिये चन्द्रकला सुकुमारी ।
सुभगा लिये वागो प्रीतम को सहजा लिय सिय सारी ।।
करि अचवन वैठे सुख आसन सकल जनन सुखकारी ।
राम सखे बलि २ दम्पति छवि सुन्दर वदन निहारी ।।

सखियन बीरी सरस सम्हारी

नागर दल सुकपूर चुना कुटि सुख प्रद लोंग सुपारी ।
दालचिनी सुचुनी वर मेवा सुघर समय अनुसारी ।
मनकी जानि स्याम कर दीन्ही स्वकर खवावत प्यारी ।।
अधर दशन रसना की उपमा खोजि २ मति हारी ।
कृपा निवाश अली सिय पिय की अधरामृत अधिकारी ।।
वीर तुम धीर मुनीशन गाये, आज सखियन हाथ ठगाये ।।
सुनियत मारि ताड़का पापिनि ऋषियन शोक भगाये ।
दलि मारीच सुबाहु सहित दल तिहुपुर सुयश जगाये ।।
शिला नारि भइ परसि चरण रज गयो सुहाग मंगाये ।
सियकर कंकण छूटन नाहीं बातन मनहिं पगाये ।।
जनि सकुचाहु प्राण धन जीवन सुनि हंसि कण्ठ लगाये ।
ज्ञाना अलि सरहज की बातै सुनि २ अति मन भाये ।।
ललन ससुरारि छांड़ि कंह जैहो यह सुख कतहं न पैहौ ।
शाशु शशुर सारी सरहज सब मिथिला विरह सतैहौं ।।
मानि ननद नाते ननदोई फिरि विधुबदन दिखैहौ ।
प्रमदावन भूलेहु जनि रघुवर निजकर पतिया पठैहौ ।।
जो तुम सांच अवध नृपनन्दन सांचि कहो कब ऐहौ ।
ज्ञाना अलि तब शफल मनोरथ जब हंसि कण्ठ लगैहौ ।।

बसंत पंचमी

श्री अग्र पद (८५)

आज बसन्त पंचमी पूजा श्रीरघुबर की बधाई ।।
कनक कलस सजि भरि धरि शिर पर आम और जब ल्याई ।
चोवा चन्दन और अरगजा मोतियन चौक पुराई ।।
रतन जटित पिचकारी कर गहि केसरि रंग भराई ।
तकि २ मारत श्री रघुबर को अबिर गुलाल उड़ाई ।।
श्री रघुवर सिंहासन बैठ निरखि २ सुखपाई ।
छोड़व छिरकब भरव परस्पर ऐसी खेल मचाई ।।
नवल बसन्त नवल मोरन वन नवल नवल मन भाई ।
अग्रदास गावहिं श्रीरघुबर फगुआ परम्पद पाई ।।

श्री अग्र पद ८६

डफ बाजी जनक दुलारी की ।
चहुं दिशी सखि जड़ाउ छड़ी लिये पिचकाकर अवध बिहारी की।।
मारा मारा मची कुंजन में, छाइ अबिर अंधियारी की ।
यह छवि देखि मगन सुर मुनि भये अग्र अली बलिहारी की ।।

थिरकत आबैं लखो गोरिया ।
लाला भागि चलो यहि औंसर ना चलिहैं बरजोरिया ।।
लपटि झपटि गहि एक एकन कंहदश २करैं होरिहोरिया।
कोविद नारि गई रानी ढिग फगुवा देवो तव छोरिया ।।

होरी जनक लली संग खेलत राजकुमार ।
अविर उड़ावत धूम मचावत गाबत राग धमार ।।
मलि गुलाल मुख चूमि लेत हंसि अवध छयल दिलदार।
मोहनि अली प्रेम में दोउ सुधि बुधि दीन बिसार ।।

रंग डारो न मो पै धनु धारिलाल ।।
जो मोरि सारी पै रंग परैगो तौ तौहि देउंगि गारि लाल ।।
तुम्हारे संग रघुवंशि छैल सब मोंहिं संग सखियां हजारिलाल ।।
रामप्रसाद श्रीसिया प्रसाद तें कबहुं नही मै हारिलाल ।।

पिय लखु आलियां फागु रस माती ।।
मति मानो अवला अति चपला भरि है सकल करामाती ।
ठहरिय छिनक टरिय जिन इत ते जुटि जै है पांति के पांति ।।
व्यंग सुबचन सुनाई हंसि २ नारि वनैहै भलि भांति ।
अजु चहो कुशल तो छोडो रघुनन्द (कहि) प्रेम भरी मसुकाती ।।

रसिया को नारि बनाउंगी ।
कटि लंहगा उरमांह कंचुकि चुनरी शीश उढाउंगी ।।
गाल गुलाल हगन में अंनजन बिन्दी माल लगाउंगी ।
सियाअवी ताली वजायकर स्वामिनिनिकट नचाउंगी।

नव नागरि वाल बने रसिय।
दृग अंजन खंजन रतनारे तकनि तीर वांकीगंसिया ॥
वैदी भाल विशाल विराजै नथ वेशर लटकन लसिय।
कंचन कुंवरि स्याम तन सारी घुंघट पट मुख छविशशिया॥
वाह २ रे अवध नृपति छोरी ॥

खूब बनी नव वधू दुलहिया गूंघट पट किन खोलोरी।
स्यामा वाम सुरुप वति तुम दुलह तुम्हारे को भोरी ॥
चटक चूनरि बर छीट को लंहगो नथ वेशर तिय मणि होरी।
वेदी भाल विशाल नयनि सिन्दूर मांग दृग आंजोरी ।
सिय जू चरण पड़ो बर पैंहो नर भूषण पिय चित चोरी ।
यह सौन्दर्य निरखि जग को है जो नहि तुमने मोह्योरी ॥

भीने रहो रंग भीने रहो दोउ ।
यह रंग भीनी छवि अखियन की प्रीतग नित २ देते रहो ॥
आपरंगो रंग डारो हमन को हमसे भीरंग लेते रहो ।
सिया अलीयह रंग की बधाई मोहि मुख चुम्पन देते रहो ॥

श्री अग्र पद (८७)

अब के बसन्त अधिक बनि आयो हो ।
खेलत बहूत सदैव अवधपुर यह सुख कबहू न पायोहो ॥
ओर वेर बहुतै सखि मिलि २ मारति भर पिचकारी हो ।
अबके खेल सरोवर सन्मुख कहि न जाय छवि न्यारी हो ॥
चोवा चन्दन अतर अरगजा नाना रंग अबीरहो ।
केशरी कुम्कुम कीच मची मनो वरषत भादौ नीर हो ॥
चंग मृदंग उपंग खंजरी मधुरे सुर सहनाई हो ।
जीतत जबहि नायका नायक सहचरि उठत बजाई हो ॥
कोउ सखि गुचि श्लाघी प्रीतम को कोउ सीतागुन गावै हो।
दशरथ जनक दुहूं मिलि प्यारी गारी देहि दिवावै हो ॥
यह छवि निरखि सुमन सुर बर्षत उचरतजै रघुराई हो ।
सीता राम फागु रंग राते अग्र अली बलि जाई हो ॥

श्री अग्र पद (८८)

खेलत राम रघुपुरी रुचि सो बहुभातिन सुखदाई हो ॥
इत जानकी युवति मण्डल मेंउत सोभित संग भाई हो।
चंवर छत्र लिये ध्जा पताका रचना रुचिर बनाईहो॥
सबैंस्वांग को सौज सची जैसे निघट न जाई हो।
बाजे बजन लगे दुहुं दिशिते गावत गारि सुहाई हो ॥
मनहु द्विरद छूटे मद माते लरत परस्पर धाई हो।
केशरिबारि कुन्कुमा भरि२ छुटत छिछ पिचकारी हो॥
प्रेरित पवन मनहु पावस ऋतु छन बर्षत पुरवाई हो ।

चोवा चन्दन छल बल करिक प्रीतम मुख लपटाई हो ।।
राजिव नैन लेत जब बदलो तव सिय शैन सुहाई हो ।
चारुशिला रुख धाई अली इक छल करि पिय धरिलाई हो ।।
हा हा किये तबै भल छुटि हों कैं सीता शिर नाई हो ।
मृग मद मलय अबीर सुरभि सखि अजिरन कीच मचाई हो ।।
उमड़ चल्यौ अरगजा पनारनि वीथिन नदि बहाई हो ।
कृस्न अगर सों भरे चह वचा धूप धूम नभ छाई हो ।।
सौंधो लहरि महोदधि मानो पुरजन प्रीति कराई हो ।
भरति भरावति कुंवरि कुवर रस होरी कहे किलकाई हो ।।
मनु मघवा धुनि व्यापि रही सव उठत मदन मन भाईहो ।।
पख गोटा बीरिन में पंछी मिसके हाथ दिवाई हो ।।
रवान लगे उडि गई चिरोंजी हंसि करताल बजाईहो ।
खम्भ २ प्रतिबिम्ब स्याम के जहं तहं देत दिखाई हो।।
कुश ध्वज कुंवरि भरति भ्रमसों जब तब हसि करत खिलाई हो ।
पलटे हकरे जाइ सत्रुहन कज्जल आंख अजाई हो ।।
करत सबै भामिनि मनभायो नारि वेष बनवाई हो ।
सिय जू की हौं दाशि बदी तो तौही लेहु छड़ाई हो ।।
रंगरंगे खेलत अंग अंगन जनकसुता रघुराई हो ।
रीझि सुमन वर्षत सुर संघट दिवि दुन्दुभी बजाई हो।।
जाल रंध्रनिरखत सुख जननी आनन्द सिन्धु बड़ाईहो।
तन धन प्राण करत न्यौछाबरि बारत बहुत वधाईहौ ।।
बीच्च कियो कौशल्या रानी फगुआ गोद भराई हो ।
सीताराम विनोद फागपर अग्र अली बलि जाई हो ।।

श्री अग्र पद (८९)

रघुकुल बधू झरोखे झांके राघो खेलैं हौरी है ।
भरत परस्पर सुधि नहि पैयत को प्रीतम को गोरी हो ।।
जहं तहं राम जानकीसन्मुख लाघब कही न जाई हो ।
केशर कुम्कुम कीच मची हैं बर्षत धन पिचकाई हो ।।
नभ बिमान गन थकित रहे है सुर बनिता सब गावै हो ।
पुष्प वृष्टि करि जै जै उचरे प्रमुदित द्वन्द मचावे हो ।।
केलि कुलाहल कौतुक देखैं पुर वासी बड़ भागी हो ।
सीताराम स्वरुप हृदय धरि अग्रअली अनुरागी हो ।।

श्री अग्र पद (९०)

जानकी खेलन होरी पिय संग चली ।।
अपने २ भवन से निकली उर सोहै चम्पाकली ।
श्रुति कीरति उर्मिला माण्डवी चारों जनकलली ।।
राम लखन रिपुदवन भरत की जोरी बनि हैं भली ।

सिय जु के छूटि गुलाल मठि भरि राघो के पिचका चली ॥
रमकि झमकि पिय के सन्मुख हाई मुख भरि रोरि मली ।
दुहुंदिशि ते रग वर्षन लागे कुम्कुम छाइ गली ॥
राजा दशरथ कोशल्या झरोखन दृग सुख लेत भली ।
सीताराम विनोद फाग में बलि २ अग्र अली ॥

श्री अग्र पद (६१)

सीताराम विनोद फागकी निरखो सखो बलिहारी ॥
जग भूषण निर्दूषण जोड़ी राजत अवध विहारी ।
मुन्दर बर रघुवीर धीर अति शोभा निधि सुकुमारी ॥
चारुशिला विमलादि अली गन मध्य सीय छाव धारी।
श्रुति कीरति उरमिला माण्डवी यूथ २ लिय प्यारी ॥
अपनी अपनी टोल खड़ी सब रगन साज सम्हारी ।
प्रीतम स्याम सुजान सग लिय सखा समाज सुधारी ॥
खेलत रंग उमग अंग २ हार जीत चित्त धारी ।
चचल चपल चहुं दिशि सखिगन सखा स्याम दिय गारी ॥
धूम मची खेलन में सो छवि कहि २ सारद हारी ॥
अग्र अली उर बसो अहो निशि शील सरासन धारी ।।

रघुनन्दन खेलत होरी ।

बिपुल सखिन संग जनकनन्दनी बन्यों सखा हरि ओरी ।
फाग मची बहु बाजन गाजन होत सोरचहुं ओरी लसे सब सुन्दरजोरी॥
कुंकुम कीच मचो सर्यू तट लाल भये जल धारा ।
वर्षहि रग देवतिय नार्चाहि काहू पट न सम्हाराअंग सब रंगन बोरी ॥
राम सखा ललकारि अग्र बढयो इत सखियन करि जोरी ।
भरत लखन रिपुदवन लालको धरि ल्याई निज ओरिकरहिं मनभावन गोरी ॥
भूषण बसन उतारि लीन्ह सखि निज भूषण पहिराई ।
रामचरण सखि छांड़ि दीन्ह तव सियजु कि जीत कहाईभई जै जनक किशोरी॥

सइय्यां से खेलत होरी हो भुलनि वालि गोरी ॥
बहुत दिनन में पायो अकेली लाल पकरि भरि कोरि हो ॥
अग्र जन दृगन लगाञ्ज मधुर हंसी मसलि कपोलन रोरि हो ॥
मधुर अलो मन के भायो कियो मुख चूमत तृण तोरी हो ॥

श्री अग्र पद (६२)

मोपै पिचकारी नघालो छयल जोहमपर पिचकारि चालि हैं ॥
तो तुम्हे लै भिजाउगी पहला श्री जनकलली जुकि—
आयसु लैकैं आउं इतै रहो ठाठे गयल ॥
अग्र अली रघुनन्दन प्यारे देखो मै आज तुम्हारो फयल ॥

रंग होरी होरी होरी लाल ।
यह जोरी छबि लखि भइ निहाल ॥
तन स्याम गौर चहुं ओर बाल,
घन दामिनि पहिरे कनक माल ॥

सिय सुभग गाल पिय दै गुलाल, जनु कनक लता पूजत तमाल ।
चितवत दोउ युगल प्रिया कृपाल जनु होरी बाटत दै गलाल ।।
कहां पायो हैं लाल गुलाल गाल ।
जनि सकुचाहु सांचि कहो कृपाल ।।
कित छैल फैल चपुराई, गई किधों सान्ता ने सान्ति स्वभाव दई ।
मतिविबशभई अतिमोंदलई, सबविबशरिगयो फरफन्द ख्याल ।।क
हमसे इत निठुराई करत हौ, उत भगनि वश पांव धरतहो ।
देखत सन्त स्वभाव भरत हौ, उघरि गयो अब हिय को हाल ।।
रमतराम सब ही सन प्यारो अर्थ समर्थ सुवेद विचारो ।
व्यर्थ वेन नहि होय हमारो, चैनएन मुद दैंन माल ।।क०।।
जो हम रमत सवहि सन प्यारी, तोतुमहू निज लेहु विचारी ।
मुनि२गगनमगन सुरनारी, वरषि सुमन लखि भई निहाल ।।क०।।
रसरसि प्रीतम प्राण पियारे, सियस्वामिनि अंसन भुज धारे ।
युगल विहारिणि तन मन वारो कनकलता लिपटी तमाल ।।

झूलन विहार

बिजुरी चमके घन घहराय ।
तरवर टपकत कोकिल कूकत पपिहा रटनि नेह उमगाय ।।
पावस छटा अटा चढ़ि निरखत जनक लली रघुराय ।
रसिकअली तड़फत जब वादर प्यारि पिय उर लपटाय ।।
झूलत पधारोजि हमारो राज ।
कारि पिरि घटा घन उमड़ि घुमड़ी आये बिजुली चमकत आज ।।
सुनी वानी रस सानी प्यारे चले झूलन के काज ।।
कृपा निवास अली की जीवन गरे लाग तजि लाज ।
प्यारी झूलन पधरो झुकि आइ बदरा ।
सजि भूषण वसन आंखियन कजरा ।।
पान कीजिये काहे को सुख लीजिये अली ।
तुमतो परम सयानी मिथिलेश कि लली ।।
देखो अवध ललन पिया आगे खडे ।
रस वर्षे सुधा मुखि जब पायन परे ।।
श्री अग्रपद (९३) चले दोउ झूलन को हुलसान ।।
पिय प्यारी के नित्य झूलन है नहिं कछु काल प्रमान ।
पाय प्रदोष काल सखियन संग गान तान झमकान ।।
पहूंचे झूलन कुंज सुहावत फले विविध लतान ।
मोरन के यूथैं बहु विचरैं, नाचत पंख फुलान ।।
जाति जाति के पक्षी बोले भरि रहे शब्द दिशान ।
चहूंदिशि मणि मय महल बिराजे मध्य विचित्र वितान ।
तामधि सुन्दर परयो हिंडोला मोतिन के लहरान ।

तापर बैठे दियगल बाही प्यारी पिय रस दान ॥
नाना यन्त्र लिये सखि गावति लेत स्वरीली तान ।
दोउ दिशिते सखि झुलवन लागि छबि लखि हिय उमड़ान ॥
दोउ मिलि झूलत हैं रशमाते अग्र निरखि वलि जान ।
करि झूलन रस सिन्धु मगन दोउ चले प्यारि अस्थान ॥

श्री अग्र पद ६४ मल्हार जनकपुर लागत तीज सुहाई ॥
रंग रंगीलो अतिहि छबीली सबमिलि झूलन आई ॥
सावन मन भावन पिय प्यारो अवनी सहज सुहाई ॥
पावन कुंज पुंज सुख बरषत करषत मन बरषाई ।
कंचन खम्भ जड़ित डाढी नग विविध विचित्र बनाई ।
रेशम डोरि कारि वनि आई चहूं दिशि जलज जराई ।
लाले बाल लाल रग भीनी लालन लाल लड़ाई ॥
श्री प्रसाद, प्यारी कर गहिकैं मंमल गाई चड़ाई ।
चारुशिला, पिय नैन इशारन झूलन प्रथम सिखाई ॥
झोका देत लेत सुख पिय को मन्द मन्द मुस्काई ।
लली पाग लाल शिर चुनरी लाली अति मन भाई ॥
उमगेउ रंग अनग परस्पर मैंन मलार जमाई ।
गावहि समर रंग भरि भामिनि कोकिल कण्ठ लजाई ॥
ठाकुर हमरे राम मन मोहन अंगन रूप लुनाई ।
ठकुराइनि मिथिलेश लाढ़िली शील सनेह भलाई ॥
होड़ा होड़ी मच्यो है हिडोला शोभा कहि न शिराई ।
अग्र अली प्रिय दम्पति झूलत जनक लली रघुराई ॥

श्री अग्र पद (६५) हिडोरने झूलत जनक दुलारी ।
सखि इक जोर किशोर रूपनिधि विविध भांति तन सारी ॥
कचन खम्भ पाटि पडुली डाडी विद्रुम दुति न्यारी ।
पद्मराग मड्डवा वेलन पन्ना आड़इन्द्र मनि भारि ॥
धाम निकट आराम हरित द्रुम क्रीडत तह सुकुमारी ।
गावत मिलि हैं हरषि हिंडोरा कल कण्ठित उन हारी ॥
करन अन्दोल लोल चंचल चल जनु दामिनि छवि हारी ।
सांट लिये सजनी डरपावती नाम लेहु पिय प्यारी ॥
नाम न लियो सरूप सूचि कर देखि ईषु धनु धारी ।
सर्मं स्वेद विन्दु निरखि वदन पर अग्रअली वलिहारी ॥

★

श्री अग्र पद ९६

तितला हिंडोले झूलत सिय महारानी ।
श्रुति कीरति उर्मिला माण्डवी चारुशिला गुणखानी ॥
रच्यो हिंडोरा नाम लिवत्रति चतुर सखी मुसुकानी ।
सिया जू सकुचिरही नहि बोलति अग्र अली मनमानी ॥

———

श्री अग्रपद(९७) हिंडोरे झुलत सीताराम ।
स्याम गौर अभि राम मनोहर रतिपति के चितचोरे।।
नील पीत वर बसन लसत तनउठत सुगन्ध झकोरे ।
सहचरि हरषि झूलावति गावति छवि निरखत तृण तोरे ॥
मन्द २ मुसुकात छबीलो रमकत थोरे थोरे ।
अति सुकुमारि अग्र की स्वामिनि डरपि गहति पट छोरे ॥

———

देखो राम बने जनु सावना । सिया लगि रंग बढावना ॥
सियवर की मोतिन की माला सो वगपांति लजावना ।
इन्द्र धनुष सिन्दूर सिया को घनरस को वरषावना ॥
पछिले पवन सुसन्त विचारो स्याम घटा प्रगटावना ॥
रवि बिनु कवि बुद्ध मिलि के लागे रस की झरी लगावना ।
सिय जू ऊत्तर दिदि की दामिनि राम स्वरुप लखावना ।
चमकी झमकि सो निज दाशन के अन्तर जोति जगावना ॥
ब्रह्मदेव हू यह सावन को करत निरन्तर ध्यावना ।
सियाराम जू जन्म २ की जिय की जरनि मीटिावना ॥

———

झूलैं नलल हिन्डोले, पिय प्यारे संग बनि ठनि स्यामा ॥ रतन जड़ित अति रुचिर हिण्डोला तामैं, रचना अनेकद्रुम-सावन के कुंज वीच, बाजत मृदंग आदि गावत समूह-सखि, कोटि काम रति बामा ॥ सीतल सुगन्ध मन्द वायू-के प्रसंग तहां, घेरि घेरि आवत वलाहक के वृन्द नान्हि, नान्हि बुदियन वरिषनके समै छबि, अति शोभित सिय-रामा ॥ शीश को नवाइ ईश को मनाई कै मुनिश, वार २-विनय करत कर जोरि २. नृपति किशोर व किशोरी जू-आनन्द रहै, यह हमार मन कामा ॥

रागमलार

नृपनन्दन मिथिलेश किशोरि अलबेली झूला झूलै ।
पांयन पांय करन कर जोरे अरस परस रस हूलै ॥
मरकत कनक चर्म मन सिज के गोहन रग अतूलैं ।
रसिक अली अद्भूत रस लीला निरखि १ चित फूलै ।

लिये झूलै छबीले सुधर घनिया ।
घुंघट वीच अनोखी चितवनि बदन सरोज कशे तनिया ॥
मन्द हंसनि मुख चन्द सुवारस जनकलली रघुकुल मनिया ।
शीलमणि नव रंग रंगीली जोरी बनी सुखद धनिया ॥

श्री अग्रपद (९८)

झूलत राम राजीव नैन ॥
जनक जा सनमुख विराजति तडित ज्यो घन गैन ।
अतिहिं झूलत मनहिं फूलत रहसि तोषत मैन ॥
लाल के उर लागि शोभा निरखि करषत ऐन ।
परसपर अनुराग दोउ बदत मधुरे बैन ॥
जाल रंध्रनि निरखि वनिता अग्र उरसुखदैन ।
झुलो नित्त यहि झूलन हों, मोरा वालम जी ।
आप झुलो व झुलावहु प्यारी हिय हिय में रस फूलन हो ॥
झमकि झुलावै अलिगन गावै चितवन की अनुकूलन हो ।
जुलुफनि जाल अरु झि मुसुकावै फहरनि अंग दुकूलनहो ॥
स्याम सुरभि वन सघन सुहावै दामिनि छवि घनतूलन हो ।
यह शोन्दर्य निरखि सुख वनिता हिय नव नेह सुमूलन हो ॥
पिय लखु सावन सुवहरिया ।
धीर समीर नीर बरषत सत वशि गये सब्रुज सहरिया ॥
झूला झूलिये भूलिये मति पिय करिये नित कचहरिया ।
कोविद मोद विनोद महा लखु जल थल वहत डहरिया ॥

प्यारी झूलन पधारो पिय रस वरषै । तुम दामिनि वरण पिय घन दरषै ॥ यह लखन सरस इस दृग तरसै । दै सबहि ललित सुख विधुकर सै ॥ चली लली जु झूलन सुनि सखि बच सै । लखि नकज प्रिया के बड़ भाग फल सै ॥

श्री अग्र पद ९९

झूलत सिया राजिव नैन ।
रतन जड़ित हिंडोलना सखि राम सुख के ऐन ॥
स्याम अंग पर गौर झलकत दामिनी घन गैन ।
मैथिली रघुवीर शौभा निरखि लाजत मैंन ॥
नाम पिय को लेहु नागरि सब सखिन मन चैन ।
जानकी नहि लेत मुख सो देति लोचन शैन ॥
परस पर झुलत झुलावत वदत मधुरे वयन ।
अवधपुर नित केलि दम्पति अग्रआनन्द दैन ॥

श्री अग्र पद १०७—हिडोरना में काँई झूलो राज । पिया प्यारी सुकुमारी ॥ अगर चन्दन को वनो हिडोरा-मलयागिरी को पटा । रेसम डोरि पवन पुरवइया वह-सावन की घटा ॥ प्यारी झुलैलाल झुलावें भली बनी-सजनी । उड़ि २ अचरा परत भुजनि पर डरपति शशि-बदनी ॥ विपित प्रमोद लता कुन्जन में श्री सरयु के

तटा। सिय प्यारी के झूलना वे निरखति अग्र छटा ॥

श्री अग्र पद १०१

दशरथ सुत अरु जनकनन्दनी चितवनि में चित चोटेरी।
नान्हि २ बुन्द पवन पुरवैया बरषत थोरे २ री ॥
हरि २ भूमि घटा झुकि आई सर्यू लेत हिलोरे री।
उपवन बाग विहंगम बोलें दादुर मोर चकोरे री॥
हयदल पयदल गजदल रथदल कोटि बने चहुँ ओरे री।
बाजन ताल मृदंग झाँझ डफ शंकन की घनघोरे री॥
नागरी नाम लिवावें पिय को सियजू हँसि मुख मोरे री॥
अग्रदास हरिरूप निहारे चरण कमल बलिहारें री॥

—※—

झूलत नवल दशरथ लाल

सरयु तीर प्रमोदवन में लिये संग सिय बाल ॥
अरुण मणिमय हेम डाँड़ी रतन खम्भ विशाल।
गुही रेसम डोरि मोतिन पर्डुलि जटित प्रवाल ॥
लखि विचित्र हिडोल विमला नटति दै करताल।
हेरि हरि मुख देति झोका परी छबि के जाल ॥
प्रेम वश लखि गही प्रीतम बोलि बचन रसाल।
राम सखे विलोकि यह रस कोत होत निहाल ॥

—※—

दशरथ राजदुलारे सिया संग झूलें हो ॥
सर्यू किनारे सुहावनि कदम जुरि छहियां हो।
ताहि तरे झूलें हिडोला दिये गल बहियां हो ॥
एक ओर जनक किशोरी सखिन संग सोहैं हो।
एक ओर राघो बिहारी लली मुख जोहैं हो ॥
प्यारी के लट पिया जुलुफन झूलत अरुझें हो।
अचल रहैं सखि स्यामा कबहुं नहिं सुरझें हो ॥

—※—

राग सोरठा—नवल रसिक झूलें, प्यारी संग लीन्हे। मन सो मन दृग सो दृग दीन्हे॥ चारुशिला अलि हरषि झुलावें-गावें तान नबीने। बजत मृदंग ताल सारंगी लेत तान-स्वर झीने॥ बढ़त उमंग अँग अंग छिन २ पिय प्यारी-रंग भीने ज्ञाना अलि छवि निरखति ठाड़ी सो समाज-जित कीन्हें॥

—※—

रसिया नामानैं सजनी झूलत मन न अघाय। सोवति सजनी अपने भवन में औचक मोंहि जगाय ॥ वन प्रमोद कुंजन २ में नित उठि झूलत आय। ज्ञाना अलि-

सिय पिय संग झुलिहों अभय निशान बजाय ॥

—卐—

हिडोरे झूलत कौशल चन्द ।
बाजहिं बाजन मधुर गान ध्वनि देशों दिशि होत आनन्द ॥
सर्यू तीर शुभग शृंगार बन ललित परन फल फूले ।
गुंजहि भ्रमर मधुर स्वर कोकिल बोलहि पिय अनुकूले ॥
फूलन केर विचित्र हिडोरा लसत फूल मय डोरी ।
फूलन के युग खम्भ मनोहर रचि पचि सच्योरी ॥
फूल मुकुट पर लसत रामके फूलन के सिय सारी ।
नख शिख लौ फूलन के भूषण दम्पति अंग सँवारी ॥
फूल तरंग उडत सर्यू की फूल वरषि घन घानी ।
रामचरण सखि सब शृंगार किये फूल गान मय बानी ॥

—卐—

हिडोले झूलत सिया रघुनन्दन ।
चलरी सखी नैनन सुख लीजै देखि २ दोउ चन्द ॥
सावन घन घमण्ड झुकि आयो मधुर २ झरि घोरे ।
मधुर मधुर मृदंग सहनाई बोलहि नाचहि मोरे ॥
झूलहि रघुवर जनक नन्दनी सखियाँ झुलावहि जोरे ।
झूलहि भूमि जाँहि सर्यू में झुकि छबहि हिलोरे ॥
अति सुन्दर बन बन्यो हिडोरा संग सगाज सब झूलैं ॥
इत उत झुकि २ झूलैं हिडोलन मारहि गैदन फूलैं ॥
झूलहिं संग झुलावहिं बहु प्रिय मधुर २ स्वर गावैं ।
रामचरण नभ सुर तिय नाचहिं गाय सुमन झरि लावैं ॥

—卐—

हिडोले झूलत लाड़िलि लाल
नील सघन पल्लव तरु शोभित जनु बितान घन माल ।
गर्जहि मधुर २ पिय मन लै कोकिल शब्द सुराल ॥
बरषत मेह झरत तरु अमृत बोलतमोरि रसाल ।
श्री सरयू उमगत उज्जबन जल लहरि उठत मनोजाल ॥
त्रिविध पवन निन्दत मारुत चल पट फहरात सुलाल ।
पद कर भूषण तड़ित नखत शशि निन्दत धनु सुर पाल ॥
बहु सखि संग २ झूलत हैं बहुत झुलावत बाल ।
गावहि मधुर लाल मन मोहैं करहि विविध रस ख्याल ॥
मनहु मदन रति के ब्याहन कहं साजि सकल निज जाल ।
लाल बिहार देखि वन भूल्यो बिशरि गयो सब हाल ॥
यह रस रासि रसिक कोई सखि सोंइ निशि दिन रहत निहाल ।
रामचरण यह छांड़ि कहै कछु कारिख तेहि मुख भाल ॥

—卐—

हिंडोले झूलत प्यारो प्यारी ।
नव योवन गुन रूप नये दोउ रघुबर जनक दुलारी ॥
अरुन बसन वर लसत दोउन तन मनि भूषन छविकारी ।
इत प्यारी को हलत चन्द्रिका पिय कलंगी छवि भारी ॥
मचकैं लेत हिचकि दोउ गति सो पग नूपुर झनकारी ॥
गावत अली मलार राग रुचि गोउ गति लेत सुधारी ।
कनकभवन मुद मंगल शोभा नित उछाह रसकारी ॥
रसिक अली बारत तन मन धन निरखि २ वलि हारी ।
दिये गल बाँहीं, झूलैं दोउ रसिया ।
नेह नवल रस रंग वढ़ाये जनु दामिनि घन माषीं ॥
अति बिचित्र रसमय हिंडोल में छवि सुख सिन्धु समाही ।
झूलत रसिक मनि रघुनन्दन । संग सिय अलबेली नागरि
वदन छबि बहु चन्द ॥ रतन जटित हिंडोलना लखि सूरशशि
दुति मन्द । रसिक अलिगन झुलावति फंसी छबिके फन्द ॥

———

प्यारो प्यारो को झुलावे गावे रसभरी तान ॥ कनक
भवन में कनक हिंडोला रविशशि ज्योति लजावै । चहूंदिशि
ललित बितान बादले झालरि झुमका सुहावै ॥ इत घन गरजत
रिमिझिमि वर्षत मृदु मृदंग धुनि छावै । रसिक अली सिय
प्रीतम ऊपर बार २ बलिजावै ॥
तेरी झमक झूलन पर वारिरे ।
झूलन जोर मोर अंगन की चित वनि अनियारिरे ॥
पान खात गावत स्वर मधुरे छबि उमगत लग प्यारिरे । कृपा
निवाश दाशि चरणन की अवधविलाश बिहारिरे ॥

———

झूलैंझमकि झुलनवां लाल लली । वन उपबन निन्दत नन्दन बन
परि रह्यो फलि फलन फुलनवां ॥ सुर निरखत अति दशन
अधर छबि छकी भारती जितन तुलनवां । कोविद तन
मन भूशन बसन सब करत निछावरि उपर हुलनवाँ ॥

———

सिय जहो झूलत फूलभई
फूली २ भूल हिंडोबे अनुकूली अधिकई ।
प्रीतम प्राण झुलावत छबि सो शोभा निरखि नई । रूप रसिक
रस छके परस पर म.नत न हृ तू तई ॥

———

झूलन कि झांकी अजब बनी है प्यारि संग झूलैं पियरबारे ।
स्यामलि सूरतिया पै गोरि सिय सोहति अंखिन में सोहै कजर
वारे ॥ भूषण बसन रामसिय राजतरति अनग छवि छोरवारे ।

सरयू तीर प्रमोद विपिन में हरि लीन्हो मेरो हियरवारे ॥ घनगरजै चमकै दामनियां सुनि २ बोलत मोरवारे। नान्हि २ बुदिया परतभूमि पर धीरे २ बहत समिरबारे। रामशरण दम्पति सुखमालखि नैनन बहै जलधर बारे। झूलन कि झांकी में चित नहि जाको जनु भूंकत कुकर सियरवारे ॥

झूलन्दा तेरी अंग २ माधूरी जोर। सुरंग पाग मोतिनदी कलंगी हंसि बोलनि चित्त चोर। भृकुटी कुटिल नैन रतनारे हेरनि बंक मरोर। प्रिया सखी दोउ अवध बिहारी बलिहारी तृण तोर ॥

झूलते हैं झूला मूला मुद लाल ललीरी ॥ झुलावै नजीर बना हीर मनि गना। झुलवाती हैं हुस्न भरी भीर अलीरी ॥ देता है आब अब्र जब्र हुस्न दिल नसीन। जाना जहान आन मानो कल्प कलीरी। बागे बहार जागे दिलदार कार सब। धीरे समीरे सीरे गति लागि भलीरी ॥ गाते हैं गुणी ल्याते हैं तानें अजब बहार। कोबिद रचे हैं नाच परी दिल को छलीरी ॥

राधो रमकि झुलावै प्यारी बाढ़त उमंग। लखि ललकि नवेली गावै नवल सुअंग ॥ सोहैं भूषण अमोल मणि वसन्न सुरंग। मोहैं मनसिज रति लखि सखिन को अंग ॥ सिय वदन विलोकि लाल भये मन दंग। सिय रसिक अलो के हिये यही रस रंग ॥

हो जि धीरा २झूलो लाड़िली डरैछै। अंग उघरै छै मोति लर लरुकि परैछै ॥ अति सुकुमार भार योवन को मृगनैनी चोंकि परैछै। जन रघुनन्द सिया पिया छबि पर पलकों से पवन करै छै ॥

दै गलबाहीं झूलैं दोउ आज।

सरयू तीर तमाल कुन्ज में जनकक्लली रघुराज ॥ काह कहूं सखि कहत वनैना कोटिन सुख के साज। मधुर अली सब तजि संग झूलिहौं छांड़ि लोक कुल लाज ॥

धीरा झूलो जि धीरा झूलो।

मोरि छतिया धरकि कांइ हूलो ॥ बार छुटिगै हार टूटिगै गिरिगे अंग दुकूलो ॥ राम रसिक रस सहजक लीजै नाजुकतासम तूलो। कृपा निवासी कहत छबीली छैल मया जनि भूलो ॥

झुलावत रामरसिक पटरानी।

नेह नाह को निरखि नागरी नैनम में मुसुकानी। कर गहि

डोर चकोर दृगन करि चितवनि चन्द सुभानी ॥ कृपा निवास विलासिनि प्यारी प्रीतम को रस दानी ॥

तेरी बांकी झूलन पर वारि रे ।

झूलन जोर हिया विच कसकत मानहु हूल मटारिरे । मैन कटाक्ष वान धनु भकुटी जुलुफन जाल सुधारिरे । कृपा निवासि दाशि चरणन की रहिगई ठाढ़ि कि ठाढ़ि रे ॥

ललित ललि लाल अलि झूलने झूलहीं ॥ सरयु सरि तीर मनि महल मोहन मदन मध्य परिकर निकर सुकर रुचि हूल ही ॥ युगल उत्साह चित चाहैपंकज कली सुरितुरवि निरखि हिय हर्ष फवि फूल ही ॥ गान तर तान रसउान दश दिशि श्रवण सुनि सुधुनि युग्म सखि विकी विन मूलहिं ॥

सरयू कूले बना रहैं सावन । पिय प्यारी नित झुला झुलै अलिगन झमकि झुलावन ॥ घन गरजनि चमकन दामिनि की मीरवा बोल सुनावन । बाजहिं बीण मृदंग मुरलिका राग रागिनी गावन ॥ छत्र फिराबन व्यजन चलावन दुहु दिशि चंवर ढुरावन । मन्द हंसन चितवन रस बोल न नैननि शैन चलावन ॥ अतर पान माला को पहिरन अरस परस मन भावन । भूषण वसन अंग अरुझावन भुज से भुज लपटावन । गेंद उछारन कमल फिरावन रसिकन हिय सुख छावन । रस माला तृण तोंरि अशीषत राइ लोंनि उतारन ॥

सदा झूलो मेरे दिलवर बढ़े उत्साह नया । जियो युग २ प्रिया प्रीतम यहि है चाह नया ॥ लताबितान वन प्रमोद तीर सरयू के हिंडोल अति बिचित्र मनिनमय तयार नया ॥ अनेक यन्त्र बाजते मृदंग वीणादिक । अलापती हैं गान कला सजे साज नया ॥ यही है चाह सदा नाथ अली चकोरिन के । बैठे झूलन पै दिखाते रहो मुख चांद नया ॥ यही अभिलाष कान्तो लता श्री सिया जू की की । बढ़े दिन २ सदा सनेह सुख सुहाग नया ॥

हिंडोले झूलें श्री जानकि जान ॥

युगल प्रकाश कुञ्ज कुञ्जन में बिपिन प्रमोद लतान । स्याम बदन पर जुल्फें छोड़े मन्न २ मुसुकान ॥ प्यारी संग समाज अली गन लेत नई नइ तान । युगल प्रिया बारत तनमन धन करत निछावरि प्रान ॥

झूलै प्यारी झुलावैं प्यारो ॥ मधुर २ करकज मंजु गहि रेशम रजु सुकुमारो । नैनन निरखि नकेली बिधुमुखमन्द हँसनि नृप बारो । अरुझिरहे अंग २ परस पर सरुझनि अगम निहारो । युगल अनन्य अली झूलन लखि तन मन सरबश बारो ॥

नवल हिंडोलना सखि झूलन दशरथ लाल ।

गरजि घन कोकिला बोलहि उमगि आनन्द माल । सखा नुज सब नवल सुन्दर कीन्ह नवल शृँगार । झूलि नवल हिडोलना सखि लाज कोटिन मार ।। पवनमन्द सुगन्ध सीतल नील घन चढ़ि आय । लसत दामिनि झूलते जब युगल पट फहराय ।। सुमन वर्षहिं देव हर्षहिं किन्नरी बहु गाय । रामचरन समस्त देखहिं अवधपुर जनुधाय ।।

चलो सखि देखन जइये, राघोजि रचो है हिडोल । हेम रतन मय रचो है हिडोला हमहूं झूल झुलैये ।। रघुनन्दन की छवि जनकनन्दनी निरखि नयन फल पैये । गाउब नाचि बजाइ भली बिधि स्यामास्यामरिझये ।। सावन के अनुहरित सुहावन सुभग श्रँगार बनैये यूथ । २ मिलि चलि हैं सुलोचनि लली लाला मन भइये ।। अति सुन्दर वन बनो हिडोला बहु बसन्त छबि छइये । रामचरणलखि सिय रघुबर छबि, रति पति कोटि लजइये ।।

झूलत नृपति किशोर किशोरी । बिपिन अशोक सुभग सरयू तट हरित भूमि चहुं ओरी ।। मध्य महामण्डप झूलन को मणि मय सुभग बन्योरीं । तामधि झूलत प्रीतम प्यारी सग सखी गन भोरी ।। प्रीतम चारुशिला दिशिराजत श्रीप्रसाद सिय ओरी । शान शृँगार सजे नवनगर नागरि रंग भरोरी ।। सन्मुख श्री मैथिली इशारे लीला सखिन कियोरी । कमला चन्द्र कलादिरँगीली बीण मृदंग सज्योरी ।। कोउ गावति कोउ नृत्यति थिरकत राग मलार सुहोरी । अति आनन्द उमंगतरंगन मानदाशसुखसोरी ।।

झूलद लिया वल्लभ लाल ।। लाल कंचन सम्भसुन्दर ललित डाड़ी लाल । लाल भूषण अंग झलकत लसत चीर सुलाल ।। लाल दोउ के बदन शोभा अधर बरीं लाज । लाल सखिया लाला गावति सब झुलावैं लाल ।। मोर हंश चकोर कोकिल भनत वानी लाल । लाल रीझत लाल ऊपर परस्पर सब वाल ।। झुलत झुलावत औसरिन सों परस्पर सबबाल । कृपानिवाश सुलाल जोरी निरखि नैन निहाल ।।

चलो देखें सिया रघुवीर झुलनवों झूलि रहे । रहि २ झौंका देत अलीगन उड़त सुरंग रंग चीर ।। झोंकनि में अलकै झुकि झमत मनहु भंवर की भीर । मन मृग मोहनि को वेधत है तकनि तीर बेपीर ।।

ब्यारू

श्री अग्र पद 102-चले दोउ ब्यारू कुंज अली । करि विहार झूला के दम्पति रघुवर जनकलली ।। रतन जड़ित शिविका अति सुन्दर तावर लाल लली बहुं दिशा सखियन सौंज लिये है नाना रंग रली । पहचे ब्यारी कुंज

सुभग जहाँ मध्य सुरतन थली। करि सन्मान सखी कुंजेश्वरी आनन्द भरि उछली।। बैठाई रतनन चौकी पर पूजन करि सुभली। नाना विजन कनकथार में अग्र धरी रसली।।

———

श्री अग्र पद १०३-सखी सब शैन भोग लै आई। मेवा मिश्री दूध मलाई और अनेक मिठाई।। सुरभीयुत विजन बहुतेरे थारन भरी सुहाई। पान पदारथ शुचि सुगन्ध मय वहु औषधन मिलाई।। पावत तुष्ट पुष्ट होई जावें रास जनित श्रमहाई।। चपकन में भरि धरि आगे में दम्पति के मन भाई।। पावन लगे रसिक दोउ प्यारे करि २ विजन बड़ाई। हंसत हंसाबित सखिन पवावति बातन में बिरमाई।। करिभोजन अचवन पुनि करि कै पान पाइ मुसुकाई। शैन आरती अग्र करी जब पौढ़े पलंग सुहाई।।

———

श्री अग्र पद १०४-व्यारू करत युगल रस भीने। रचि २ बिजन सखिया परोषै बहुत प्रकार नाम को गीने।। हंसि हंसि पावत हैं पिय प्यारी रूपमाधुरी सखि चित दीने। प्यारे निजकर कमल कवल लै प्यारी मुख में देत प्रवीने।। तैसहि प्यारी नोपिय मुख में ग्रास पवावति अति मधुरीने। मिसरी बहुत सुगन्ध मिले जो दुध पवावति सखि कर लीने।। करि व्यारी अंचवाय सखी सब पान पवाय सुगन्ध भरीने। दै गलवांह प्रेम रंग भीने शैन कुंज सुख अग्र नवीने।।

शयन

श्री अग्र पद १०५-वठे सुखपाल लाल आबत महल मैं। आगे २ भीर भारी पाछे असवारसारी ताँ मध्य रघुवर मदन गहल में।। चुनि २ कलियां में सेज बनायो चेबा चन्दन छिरको चलह में। पाछे दशरथ राज कुंवर वर अग्रअली निज दासि टहल में।।
श्री अग्र पद १०६—पौढ़िये रसिक जानकी रमन। सर्व ऋतु के भोख यामें महल अति मन हरन।। बिविधि रचना बनी जहं जहं बिधि निपुणता हंसन। सेज रचना बनत कहि नहिं मनहु मर सिज भवन।। पिया प्यारी ताहि ऊपर केलि कर सुख सदन। यहई आशा अग्र सखियन सुफल कुरुललि ललन।।

———

जानकि बल्लभ लालकी सखि आरति कीजै। सुन्दर वदन बिलोकि के नैनन फल लीजै।। कुणडल ललित कपेलना श्रुति अलक बिराजै। कण्ठा कण्ठ सुहावना गजमुक्ता राजै।। पाग

बनीजर तार की दुपटा जर तारी । पटुका है पचरंग को मनि जरित किनारी ॥ सिया झुकि सोहै लाली चूनरी जरिजरित किनारी । रसिक अली की स्वामिनी अद्भुत छबि भारी ॥

श्री अग्रपद(१०७) मख सेज पौढिये राम सीता रमण । राग रंग सुरुचिर शौरभ सौज बिटिका चित्र चंदवा विविध सुन्दर भवन ॥ रूप शुठि गुण कोक विद्या कुशल रचना वचन विदुष सुपिया पारस गवन । जनकजा राजीव नैन सुमैन छवि लखि अग्र सहचरि जान अपर सो कवन ॥

श्री अग्रपद(१०८) महल में सोवत है दोउ प्यारे ॥
रतन जड़ित पलका अति सुन्दर मयन मनहु तन धारे । ताके ऊपर विस्तर पय के फेन लजाबत हारे ॥ तापर पौढ़ युगल बिहारो हर रिपु कला सुधारे । करत केलि नाना बिधि दम्पति सखियन नैन निहारे ॥ हंसि २ बातै करत परस्पर वर्षत मोद अपारे । अग्र स्वामिनी स्वामी दोउ जीवन प्राण अधारे ॥

श्री अग्रपद(१०९) चलो सखि सो गये राज किशोर ॥
मणिन जड़ित की पलंग मनोहर ताके छविअति जोर ।मिली सखियन सब चरण पलोटत रस बश पिय घनघोर ॥ चौकी बालि सजग होइ रहियो लागे न कहु दृग चोर । नूपुर दावि चलो मोरि सजनी होय न जेहि पग सोर ॥ शुभग सेज सिय-राम शयन लखि ललचत हैं मनमोर । अग्र अली दम्पति दर्शन हित आवहिंगी बडिभोर ॥

श्री अग्रपद(११०) महल बिच शोर करै जनि कोइ ॥
कछूक रहस वश कछ आलश बश अब हि मैंथिली सोइ । नूपुर दावि चलो मोरि सजनी तनक झनक नहि होइ ॥ पहरेदार सजग होइ रहिंयो आवागमन न होइ । अग्र अली के जीवन धन दोउ जगै न पलका सोइ ॥

श्री अग्रपद(१११) चली सब युग छबि हिय में धरी ॥
सोय गये सखि पिय प्यारी अब आनन्द रस में भरि । लाल लली गुण कहत परस्पर आनन्द सिन्धु परी ॥ निज २ कुंज के ओर गई सखि युथेश्वरि सवरी । सबसे मिलि संग चारु शिलाथल अग्र गई स्वथरी ॥

राघोजी छबीले प्यारे नूपुर न छोरो । चरण शरग आई ये तुम्हारी जानि विरद जनिटोरो ॥ नीद विवश सब तीय महल की डर न करो पिय मेरो । राम सखे चित चढै जौ तिय ताहि जाइ रंग वोरो ॥

राधो जी कनक भवन को राज ।। पटरानी सिरताज सवन की आयशु करतल काज । नृपशार्दू ल शान बड़ जग में न्याय सवै सुख साज ।। आनन्द सिन्धु लाज दरवारिन कौन उलंघ सु नाज । दण्ड चोर जन सव को हित शोन्दर्य निहारोआज।।

श्री अग्रपद(११२) चहियत कृपा लली सीता की । नबधा भक्ति ज्ञान का करना मिट गइ शंक वेद गीता की ।। षट मत वेद पुरान पुकारत करत बाद नरबपु बीता की ।झगरो करे अरझै सुरझै नहिं मिटत न एक द्वैत भीता की ।। जाकी ओर तनक हसि हेरत करत सहाय रामजी ताकि । अग्रअली भजु जनकनन्दनी पाप भण्डार ताप रीता की ।।

इति अष्टयाम प्रसंगः

दोहा आंखहि देखत जगत को आंख बिना नहि कोय ।
अन्तर बाहर सब जगह मित्र आंख ही होय ।।

✿ श्रीमति सर्वेश्वरी श्री चारुशिला स्तुतिः ✿

जयति चारुशीला चरण शरण माद भरण पुंज । अरुण वरण कमल रज पराग रस-भ्रमर गुंज ।। सुजन हृदय बास करण सकल शोक ताप हरण । जनम मरण नसत रुप नवल धार रहन कुंज ।। श्री जानकी रमण बिहार मिलतकृपाते उदार। बिना चारुशीला कृपा रस कि रीतिनहि मिलंजु।।श्रीसर्वेश्वरि हमारि स्वामिनि बलिहारि जातु । अलि बिहारिणी तिहारि कोर कृपा की करंजु ।।

दोहा—चार द्वार युग सात आवरण कनक आवाश । मध्य बाग बिच शैन गृह रंग महल है खाश ।। रवि पावक शशि रंगकय खम्भावलि चहुंफेर । तीन आवरण महल सोइ रंग खण्ड नौ केर ।। फाटक मुख्यसु पूर्व है लघु दक्षिण हूं जान । तिनभीतर मधि आगने कमल लक्ष दल मान ।। तापर हूंत्रय मण्डलाकर खम्भ मनि रंग । मध्य कर्णिका पर पलंग राजत सिय पिय संग ।। ध्यान सियावर नित्य यह पावै कृपा प्रसाद । श्रीहनुमत हिय रुप श्री चारुशिला,अलहाद ।। वेद प्राण कर तत्व यह सुनत जरै भव पाश । मन्त्र राज के अर्थ विनकल्पि करै निज नाश ।।

झांकी पद

श्री अग्र पद (११३)

आज राम जानकी कृपालु सुन्दर सोहै । निरखत सुर नर बर मुनि शिव बिरंची मोहै ।। राम जी के शीश क्रीट रत्न जटित धारी । सिया जी के शीश फूल कोटि चन्द्रबारी ।। रामजी के प्रीताम्बर धनुषबाण राजै । सिया जी के कर कमल मुद्रिका बिराजै ।। राम जो के कुण्डल की काम कोटि शोभा ।सिया

जी के कर्णफूल राम को मन लोभा ।। रामजि के उर सोहैं मोतियन की माला चारु हार रुचिर पहिरि जनक कुवरि बाला ।। रामजि के कटि किंकिन झुनुक २ वाजैं । सिया जी के छुद्र घंटी मदन मन्त्र लाजै ।। रामजि घनश्याम वर्ण छवि के अभिरामा । सिया गौर कनक वर्ण लाजत सत कामा ।। सिया जी कि नखशिख छवि कहत नही आवै । कोटि शेष सारद श्रुति पार हूं न पावै ।। यही ध्यान हिय में रहत टरत नाहि टारचो । अग्र युगल चरण उपर वारि फेरि डरचो ।।

देखो २ सिय पिय संग राजत चारुशिला सुकुमारी ।। शिरअवैचन्द्र सिन्दूर,वर विन्दू छवि भरपुर। लखिरति मान भयो अति दूर सारी नील रंग जरतारी देखो ।।१।। झुकि रही चन्द्रिका नीकी, मुसुवयान मन्द सुख जीकी, है प्राण प्रिया सिय पी की, मिथिना सत्रुजीत नृप वारी ।। दृगकोर कृपा रस भीनी कर नील पद्म वरलीन्ही, सर्वेश्वरि "अलि" सुख दीनी, विहरत कनक भवन सुख कारी ।।

श्री अग्र पद ११४-देखो माई नवल कुँवर दशरथ को ।।मणि ।। मय जटित क्रीट अति सुन्दर गोरोचन को टीको । अम्बुज नयन नाशिका सुन्दर कुण्डल झलकत नीको ।। मणिमय जड़ित हार अतिसुन्दर हीरा माणिक नीको । कलित ललित जरकसि को जामा आभूसण पुष्पन को ।। उर सौहै मोतियन की माला भृगु लच्छन छवि नीको । कर कंकन वाजूवंध सोहै धनुप विराजत निको ।। कटितू णीर वाणकर राजै कमल फिरा वत नीको । अग्रदाश भजु दशरथ नन्दन मोहन मन सवही को ।।

श्रीअग्रपद ११५–हम चाकर रघुनाथ कुँवर के । यम के दूत
निकट नहि आवत द्वादश तिलक देखि रघुवर के ।। हौ
अयाच्ययाचौ नहि काहु हि आश्रित रहौ नही सुर नर के ।
एकै आश और नहि ध्यानों पायक भयो रावरे घरके ।। लीन्ही
शैल सम्हारि नाम को लोक वेद सौ निजकरतर के । सुरनर
मुनि इन्द्रादि देवता नाहिन और रावरे वर के ।। अधम उधार
लियो जन आपन सुनि सत वचन श्रवण सत गुरु के । अग्र
सुदास पटा लिखि पायो दसखत दशरथ सुतके करके ।।

श्री अग्रपद ११६–राग जैति श्री-यह मोहि दीजै राघव राम ।
दासनदास दासको अनुचर कथा श्रवण मुखनाम ।। मोक्ष आदि
दै चार पदारथ मेरो नाहिन काम । चरण रेणु साधुन की शिर
पर कृपाकरो सुखधाम । सन्तनसों अनुराग निरन्तर इहि
विधि वीतौ याम । अग्रदास चाहत हरि चरचा सुधा सिन्धु
बिश्राम ।।

श्री अग्र पद ११७– बिलावत—
सरयू सरिता राज सवन ते पुरी शिरोमणि रामपुरी । वेदन
हूं बहु भेदन गाई महिमा जाकी अघट घरी ।। शिव विरचि
सनकादिक नारद जगत व्यास जेहि घरि घरी । नाम उचार

होत अघ न्यारे जीवन दुरमती दूर टरी ॥ जो कोउ बसत अयोध्या माही समसर ताहि न जात करी सूकर कूकर सबै विष्णु पद आवत जात न अटक धरी ॥ जन्म भूमि राघो की प्यारी भुक्ति मुक्ति जंह गरी गरी । अग्र अहै को जो नहि वांछत बसत जहां सर्वदा हरी ॥ ———

सब तजि अवधपुरी रहिये ॥ राम रूप हिय राम नाम मख करि सेवा गहिये । मज्जन पान सदा सरयू को सम दुःख सुख सहिये ॥ जहं तहं राम चरित सुनिये नित सहजहि सुख लहियें । श्रीराम चरन रघुनाथ कृपाते नहि कछु फल चहिये ॥ ————

राग ईमनचौतारो-करत दोउ अरस परस शृंगार । गौरवरन तन राजकुमारी सांवल राजकुमार ॥ धरत चन्द्रिका क्रीट शिरनपर पहिरावत उरहार । अंखियन में अंजन आंजत जनु सान धरत शर मार । नकवेशर मोती कुसम्हारत दरपंन वदन निहार । राम सखे या युगल रूप पर वार वार बलिहार ॥

———

राजत दम्पति कनक भवनमधि रघुवर जनक दुलारी । भूषण वसन परस्पर सजि अंग लखत मुकुर करधारी । चपलासी चहूं ओर सहचरी सेवित नव सुकुमारी । रसिक अली तहं रस भरि तानन गान करित गुन वारी ॥

————

श्री अग्रपद ११८—वशो मेरे नैनन में सियाराम । कल्प वेलि श्री जनक नन्दनी रघुनन्दन घनश्याम ॥ राजत रतन जड़ित सिंहासन जुगल जोड़ि अभिराम । अग्रअली निरखत यह शोभा वारत कोटिन काम ॥ ———

युगल छवि आज अनूप बनी । कनक भवन शृंगार कुन्ज में बैठे बनी ठनी । कोटिन सखि सहचरी अमित लिये ठाड़ी सौज घनी ॥ रसिक अली उर यह समाज वसो लीला ललित मनी । ———

कैसी जोड़ी बनी मन भावनियां । इधर तो क्रीट ओ कुण्डल कि दुति अनोखी है ॥ उधर भी चन्द्रिका चित चोरने में चोखी है । वो रोरि दिये हैं भाल ये खौर केसर की ॥ इधर है नाशामणि लटकि वांह बेशर की । तापर मृगुकान अभी बरपावनियां ॥कै०॥ रहन चलन हर एक बांका पन निराला है । वहम विलोक कसाकस भि क्यारि आला हैं ॥ अनूप रूप है शोभा मनोहर ओ सुख धाम । (कि) जिन को देखि कै लज्जित हो जल गया खुद काम ॥ दोउ चित-वनि कि कहर मचावनियां । कैसी० जवां सो कैसे बयां ये "रामजन" सखमा (कि) तीनों लोक में जिनकी कहीं नहीं उपमा । ये जी में आता कि वश देखु इनकि सूरत को । उठाके धरलु हिय बिच दोनु मूरत को ॥ भूले कबहूं न छवि ललचावनियां ॥ कैसी ० ———

क्या खूब बनी है झांकी मनोहर रामसियाकी । दोउ बैठे रतन सिंहासन कर सोहै कमल सरासन यह सरबस जनक धिया की ॥ दोउ मूरति परम मनोहर शिवजी के अचल धरोहर । यह सम्पति हम सखियां की ॥ लखि राम सिया का जोरी

रति पति की मति भई भोरी मिलि गये रतन अखियां की ।। लखि रूप अनूप सुहावन भइ नेहलता अति धनधन क्या कहूं छटा छवि याकि ।।

———

हो दोउ चन्दा वशो हिय मेरे—

सिय प्यारी श्री दशरथ नन्दन अरुन कमल कर कमलन फेरे। वैठे सुर तरु तर सिंहासन आस पाश ललना गन घेरे ।। गरभुज माल परस्पर अरुझे चारुशिला मुख हँसि २ हेरे। श्रीप्रसाद सखि पान पवावति छत्र चँवर कर अलिगन घेरे। बीण मृदंग साज युत कोउ अलि गान करति शौन्दर्य सुहेरे ।।

———

प्यारो तिहारी चन्द्रानन पर प्रीतम नैन चकोर कियेरी ।। एक पलक टारन नहिं चाहत जोहत है भुज अंक लियेरी ।। तृप्ति न मानत कवहु रसिक वर रूपसुधा रस पान कियेरी ।। धनिधनि भाग सुहागनि तेरो धनि यह सुखसरसात हियेरी ।। सिया अली यह स्वाद महारस तेरे कृपाबिन कोंन पियेरी ।।

———

पगे रहो दोऊ निज प्यारनमें ।। अरुझि रहो सुरझो कवहूं ना अरुझाओ हम हम कोऊ ।। अधर सुधारस पीवो पिबावो टुक जूठन मोहि देऊ ।। सिया अली मम प्राण के सरवश प्यार हमारि मिलेऊ ।।

क्या कहौं सुमुखी सलोनी वनि रही सिय श्याम की ! नेह की पालक सदा दायक प्रणत विश्राम की ।। श्री जनक नृपनन्दनी रघुवर प्रिया सुख कन्दनी। जग बन्दनी छवि गुण भरी वलि २ गई इस नामकी ।। शीश पर मौरी मनोहर चन्द्रिका छबिधामकी। भाग की भाजन भली भाविक जनो के काम की ।। जानकी जीवन जरी सी जानकी प्रिय राम की। देखि के छवि विक गई ज्ञाना अली बिन दामकी ।।

———

सियजू रानिन में महारानी। और सवै रौतानी ।। चितबतभौंह खड़ी करजोरे इन्द्राणो ब्रह्माणी गौरा रचि२पान लगावति, रमा खवावति आनी ।। अठौसिद्धि खड़ी कर जोरे नवनिधि मनहु बिकानी। कोटिन ब्रह्मण्डन की प्रभुता रोमरोम अरुझानी जोमाया एकै घाटे पर सबहि पियावत पानी। सोउ चाहत जाकी करुणा को बार २ सनमानी ।। जाविन पातौ हिलि न सकत जो सवघट मांह समानी। संत जनन की इष्ट देवता राम प्रिया जग जानो ।।

हमारी स्वामिनी वो है जो सब रानिन में महारानी। सदा सेवैं जिन्हैं सुरनारिनी निजकारिनी जानी ।। धनद की छत्र लै छाजै झलै मुर्छल वरुन वाली। लिये वीणा शभा में जिनके गुन गावत है ब्रह्माणी ।। रमाबीरी खवावत है उमालै इत्रकर लेपै। करै रति हर्ष युत जिन्हके जरी जूती की सेबकानी ।। कहै हरिजन कहां तक है विदित सब श्रुति पुराणों में सकल। ब्रह्माण्ड की नायक वही है एक सुभदानी।

———

सिया जु के अरुणारे दोउ तरवा। मनो अनुरागिन के घरवा ।। क्या गुलाव क्या कमल कटीलो क्या वड़ लाल अनरवा। क्या कुसुम जल बुन्द परत ही बिगरत रंग निचरवा ।। क्या मखमल क्या सिरस कलंगी क्या मालती पतरवा।

इनके कोमलता के आगे क्या कपोत वट परवा ।। उरध पदुम कल्पतरु अंकुश रेखन के उजियरवा । एक एक रेखन पर वारों त्रिभुवन को शृंगरवा।। जिनके धोवत डरत देवता जनु चुइ परत इतरवा । इनसे लगन नसीं तो वृथा दण्ड कमण्डल करवा ।।

सियजू तिहारो चरन । सुर नर मुनि सब करत बन्दन । तव पद पदुम सुमंगल करन । तेहि तजि जाय नहि जिया की जरन ।। यद्यपि अधम सब औगुन भवन तदपि भरोषो तेरो करन भरन ।। तव नाम अनुपम दुष्टन दलन । देत निज भक्ति सिया राम के चरन ।। द्रबहु दयामयि तुव रामेश्वर जन । अब जनि करु देरि राखिले शरन ।।

जो मेरो अवगुण उर धारो । तो मिथिलेश नन्दनी स्वामिनि कोटि कल्प नहि मोर उबारो ।। कौन सो किया कीन्ह में नाहिन यह ससार असार पनारो । वेद विदित विरद यह तिहारो सीसी सिसकत [नाम विचारों ।। जो ब्रह्माण्ड कोटि। के नायक प्रीतम राम स्याम छबि भारो । तव बस रहत सदा पिय नायक रसिक शिरोमणि छबि मतवारो । यह जिय देखि प्रभुता निज नाते मिथिला ओर निहारो । करुणा सिन्धु शील गुण सीमा दाशी युगल प्रिया न बिसारो ।।

तव पद पदुम बिहाय न भरोष मोहि जोहि जिय लीजै सुधि मोरि सिया स्वामिनी यदपि हों अधम मलिन अध ओध खानि तदपि काहाउ मैंत तेरि सिया स्वामिनी ।। प्रभू हूंते सरस क्षमादि शुभ गुण सिन्धु किरति वदति श्रुति तेरि सिया स्वामिनी । ताहि बल सोच छाड़ि नामलै उदर भरो निदरि गुणादि कृत केरि सिया स्वामिनी ।। करत अधिक क्षोभ तोपै आप प्राण नाथ जोपै रंच तोर दृग हेरि सिया स्वामिनी । ताते बार २ कर जोरि मांगु दीन होइ राखु निज चरण की नेरी सियास्वामिनी द्रवत न कौशल कुमार तव नेह बिनु करै क्यो न कर्म योग ढ़ेरी सिया स्वामिनी । जैंहो नहि द्वार ते निकासे हूंपै दयानिधे सांचि गुणि कहत हो टेरि सिय स्वामिनी ।। जानै माया योगि ज्ञानी सिद्ध बिधि सम्भु हूंलौ निज वश माहि किये जेरि सिया स्वामिनी सोउ तव भृकुटि बिलोकति रहति सदा चाहति कटाक्ष कृपा केरि सिया स्वामिनी ।। जनक दुलारी रघुबंश मनि प्राण प्यारी अव जनि कीजं नेकु देरि सिया स्वामिनी नेहलता प्रीतम सो दीजिये धराय कर बिगरि बनेगी तब मेरी सिया स्वामिनी।

शारद बिदुचय बिजित बरानन विधुकर निकर सुहाशम ।
मदन चाप जित भृकुटि कुटिल तिल सुमन मुक्त धृतनाशम्।।
चारु जिबुक दर ग्रीब मनोहर स्वधर बिम्ब प्रति भाषम् ।
मुकुर कपोल चिकुर चय चुम्बित नयन सरोज विलासम् ।।
जनक सुता कर धृत पर नृत्यत ललित कण्ठ कृत गातम् ।
पद नूपुर रव रंजित दश दिशि उचरित ताल प्रमाणम् ।।
पश्य मुदा रघुनन्दन मतिशय चित्त चमत्कृत वेसम् ।
जनक सुता रंजित रति पति मद गंजन मग मशेषम् ।।
रसिक भनित सीता पति गीतं ललित पदावलि नीतम् ।
सज्जन श्रुति सुखप्रद मिदमद्भुत मंचित लाल बिनीतम् ।।

यह प्यारी छवि पर बारियां
स्याम गौर सुन्दर मन भावन सोइ हिये बिच धारियां ॥
जनकलली रघुनन्दन दोऊ और सखी संग सारिया ।
रसिक अली के यह मन भावत और लगै सब खारियां ॥

बलिहारी युगल किशोर की ।
दशरथ सुत श्री जनक नन्दनी सुख सुखमा शिरमौर की ॥
अद्भुत शोभा निरखि परस्पर चितवत चित्त रस बोर की ।
रसिक अली वारत तन मन धनधन दामिनी मन मोरकी ॥

वया सान चाल अल वेला गज लाज रहे मस्ते मस्ते । जिन देखा तिनके चित रतन अनमोल विके सस्ते सस्ते ॥ रस रूप माधुरी टपक रही सखि ? जात रहे रस्ते रस्ते रघुराज लला नृप नन्दनने मन छीन लिया हँस्ते हँस्ते ॥

पिय प्यारे के नैना, बडे बांके ॥ चितवन ही घायल करि डारत पुरत न धाव मलम्ह टांके पल परत न चैना ॥व० । छीन लेन कुल कानि छिनक में मारत मनहु मदनडांके । सरवश हरि लेना ॥व०॥ मद माते रसिकन रस रातेछवि छाके नहि उपमा के । मोहन मन मैना ॥ब॥ जेहि मन 'मौन, लगै सोइ जाने मृदु मुसुकान झमकि झांके । यह कासें कहूं वेना ॥बडे०॥

छवि अति बांकि हमारे हिय बशि गई । तन घन स्याम लसत पीताम्वर जनु चमकत चपला कीट लिर्पटि कटि कसिगई ॥ जिमि शशि ओर चकोर निरखि छवि बदन सुचन्द्र कला कि रूप रस फँसि गई । अंग अंग अवलोकि मधुर छबि कोटि मदन सुखमा की गरुरत खसि गई । मौन मुदित छबि अवध छयल की झमकि झरोखन झांकी दृगन मय धसि गई ॥

कल्याण—रघुवर बांधे चुनरिया पाग । प्यारी कि सारि चुनरिया सोहै जरी किनारी लाग । मोतिन मय शिरपैंच कलँगी शीश फूल दुति जाग । रसिक अली यह युगल माधुरी दरस करत बड़भाग ॥

खम्माच—बशो मेरे नयनन में सियालाल । चपला घन कंचन मरकत दुति राजिव नैन विशाल ॥ कोटि २ रति मदन बिमोहन अद्भुत रूप रसाल । राजत कनक भवन में रसिक अलि संग रँगीली वाल ॥

देखिकै अरुझान्यो जियरा । राम कुमार श्यामसुन्दर वर हमहिं नही सब ही को हियरा । वन प्रमोद विच जनकलली संग अली सकल जुरि आई नियरा । युगल प्रिया यह छबि निरखन को हिय बिच वारो सुरति को दियरा ॥

हेरनि हँसनि हमारो हरोहिया । बदन सुचन्द मधुर विहंसनि में, जादू सा कछु डारो गजव किया ॥ नैन सरोज बान धनु भकुटि, चितवत हिय हनि मारो कतल किया । वेदरदी घायल मोहि करिके, फिर हंसि कस न निहारो न मारो जिया ॥ नाम रूप नित धाम निरन्तर, गावत सुयश तिहारो शरन लिया ॥ रसिक चकोर चन्द्र छबि निरखैं, रूप सुधारस प्यालो पिलाय दिया ॥ कृपा सुदृष्टि सदा रसिकन पर, दै दै नैंन इशारोजिलाय लिया । मौन मुदित मन चरन कमल पर, तन मन सरबस बारो अवध पिया ॥

बिन देखे नयनवा ना मानै हो ।। जब से लखि दृग माधुरि मूरति रूप सुधा रस चसकाने हो । मुख सरोज मकरन्द पान करि जन मधुकर मन मस्ताने हो ।। जिमि शशि ओर चकोर बिलोकत रूप सुधारस चसकाने हो । अहह सुजान राम पिय तुम बिन कौन मौन मन की जानै हो ।।

———

अंखियन विच तुम को चुराइ राखों । कोटि करो पिय जाने न दैं हियरा से हियरा लगाई राखों ।। मृदु मुसुकनि बांकी चितवनि में तन मन अपनो रंगाई । राखों सिया अली के दोउ जीवन धन सब विधि अपनो बनाइ रखों ।।

तोहि राखों पियरवा में केहि विधि से ।। दृग विच राखो हिया तरसत है हिय पिच राखों नयन तरसै । एको बिधि धीरज नहि आवत प्यारे वताओ मिलो कैसे ।। दृग से दृगन मिलओ सांवरे हिय हिय से मिलो गर गर से । सिया अली यहि भांति मिलो जब दर्द निटे अंग अंग परसे ।।

कवित्त

वाम भजन कोउ शाक्त हुये स्मृति ज्ञान में धशे हुये । कोइ निगूर्ण ब्रह्म समझने हैं सुखमना साधना कसे हुवे ।। कोउ अज पा को जाप करै निर्जन एकान्त में बसे हुवे । जालिम हम हाय कहां जावें तेरे जुल्फ जाल में फँसे हुवे ।।

—★—

अंखियां राम रूप अनुरागी ।। श्याम वरन मन हरन माधुरी मूरति अतिप्रिय लागी ।। सुन्दर बदन मदन सत शोभा निरखि निरखि रसपागी ।। रतन हरी पल टरत न टारी परम प्रेम रंग रागी ।।

———

अंखिया रामरूप रसभीनी कोटि काम अभिराम श्याम घन निरखि भई लय लीनी ।। लोक लाज कुल कानन मानत नूतन नेह रगीनी ।। रतनहरो कैसे अवनिकैसे होगइ ज्यो जल मीनी

———

फन्द में फंसा आनिकै मनमोर किसी का । उलझन है कठिन इस में है क्या जोर किसी का ।। खो जातो है उरलाज सदन की चिन्ता यह । नवनेहका फल इस में नहीं सोर किसी का ।। सन्सार कि सुधि कैसे के रही जात सखोरी । मिलजाय निराले में जो चित्तचोर किसी का ।। में आज कदाचित जो किसी भांति चले जाउ । फिर आके अबस दरस करू भोर गिसी का ।। हरिजन जो कही देखिपरै रूप अनूपम् । सच है नहि टरता हैं दृगन कोर किसो का ।।

———

जानकी रमण रसिक मनि रघुबर रघुकुल भूषण प्यारो । अति सुकुंवार उदार ललित छवि मदन बिमोहन हारो ।। सरद बिमल बिधु निन्दत मुख छबि अमित कला उजियारो । रसिक अली पिय बिहंसि बचन मृदु जनु बसि मन्त्र उचारो ।।

———

मन में बशीबश चाह यही प्रियनाम तुम्हारा उचारा करूँ। बिठलाके तुम्हें मन मन्दिर में मनमोहनि मूर्ति मिहारा करूँ ।। भरिके दृगपात्र में प्रेमकाजल पदपंकज नाथ पखारा करूं । वन प्रेम पुज्यारि तुम्हारा प्रभू नित आरति भव्य उतारा करूँ ।। तुम आओ न आओ इहां तुमको निशिवासर ही में वुलाया करूँ तेरे नाम की माला बनाउँ सखे मन से मनको परकाया करूँ तेरे प्रेमि जनों का मै प्रेमि बनों तेरे चाहने बालों को चाहा करूं । जिस पंथ से आओ गे आप प्रभो उस पंथ में पलक बिछाया करूं ।। तुम जान अयोग्य विसारो मुझे पर मै न तुम्हें बिसरायाकरूं गुनगान करूं नित ध्यान धरूं तुममान करो तो मनाया करूं ।।

क्या बुलाक अधरन पर हलकै । जबते दृष्टि परी या मूर्ति तबते छिन पल परत न पलके ।। किधों आशम शर शर सन्धान्यो की सुखमा की सर वर झलकै । सिया राम पिय मुख मयंक पर मनहु अमी की मूरति छलकै ।।
कवन सहै चितवनि की चेटै ।। करत विहाल ढाल नहि मानत गिनत नही कोटन की ओटै ।। अंग २ दंग अनंग रंग बशि घायल परी भूमि पर लेटैं ।। सियाराम हिय वेधि नयन रस जान लिया जनपति के ढोटै ।।

लगन लगी तब कौन करै डर । सब शंशय मिटि जात अलीरी वदन बिलोक मीत अपनो कर ।। बून्द अकाश पपीहा चाहत यदपि भरे अगमग सरिता सर ।। करुणा भरे खरे घर बारे रोव्रत, सती चढै अपने सर ।। लोक लाज कुल कानि तब लौं जबलौं प्रेम रशी न फंशी गर । प्रेम सखी बलि झगड़ा कौन है, यह तन बेच्यो लबध छयल कर ।।

घुंघुरारे बार जिया लियारे । देखत दिल दरम्यान दखल दिया, जादू सा कछु किया रे ।' पिय २ रटत अटत आरत है । निशि दिन तलफत हियारे । सिया राम सस्मेर लगी उर घायल परी केति कन तियारे ।।

तनिकै हंसि हेरैरी । राजकुमार बुद्धि बौराय हिराय जाय मन, रहत न देह सम्हार ।। दूरिहिते जाके तन ताके मदन भयो जरि छार । सो त्रिपुरारि भिखारि भेष धरि अलख जगाई द्वार ।। सपनेहु निकट जाय नहिं कबहूं माया मोह विकार । सो भुषुण्डि शिशु चरित बिलोकत फसे प्रेम की जार । सुनत बोल बिनुमोल विकानी सारद सी हुशियार । राम शहाय जाय सोइ जानै अवध नगर कि बाजार ।।

श्रीराम बधाई उसव

श्री अग्र पद (११६) आसावरी-आजु बधावो दशरथ रायकै जायो राजीव नैन । आये सुख के ऐन ।। चैंतमास नौमी उजियारी यह संयोग अनूप । लगन महूरत वार ग्रह चरन चिन्ह बड़ भूप ।। बशिष्ठ आदि तपोधर धारी कीन्हो यह निरधार । दुष्टनि दुखद सुखद सन्तन को भूमि उतारण भार ।। घर २

तोरण धुजा पताका मुक्ता बन्दन वार । दूव पूत भरि नारि सुहागिनि साथिये लिखति द्वार ।। चन्दन चौक रचित आगन में दधि अरु दूव वधावै । कनक थार सीपज, भरि अक्षत मिलि संग मगल गावै ।। भू देवन कहं भूमि वाजि गज धेनु तन रथ देहि । पाइ लाग समदात नरेश्वर मुदित आशिका लेहि ।। पणव निशान मृदंग शंख धुनि जै जै शब्द उचार । कौतूहल कौशलपुर वासी आनन्द बढ्यो अपार ।। मागध सूत भाट वन्दीजन दान मान बड़ पावै । वर्णाश्रम अन्त्यज जे तन धरि फूले अंग न मावै ।। नृत्य गान वा जन्त्र वेद धुनि ठौर २ यह भनिये । लेहु २ यह कहत नगर में और श्रवन नहिं सुनिये ।। सुरतरु काम धेनु चिन्तामणि कौशल्या सुत जायो । अग्रदास रघुपति के आनन्द में वांछित फल पायो ।।

श्री अग्रपद १२०) देखि द्वार भूप दशरथ के सोभा कहत न आवैरी । मूरति वन्त मुक्ति सिधि ठाढी भीतर जात लजावैरी ।। मनिमय अजिर अनूप देखि छवि झांक लेउं सुत छावैरी ।। कोटि काम शशि कोटि भानु दुति अमित तेज तन धारेरी , घुंघर वारे केश वदन पर चंचल अधिक सुहावैरी ।। मनहु कलप तरु तेज तनक अली मधुर सुधामद मातेरी । उज्वल भाल सुचक्षण ऊपर श्याम सुभग तन सोहैरी ।। वरणों कहा विशाल नैन अतिता उपमा कहूं नाहीरी इन्दु वदन पर उडुप रहै दोउ लोल मीन की नाइरी ।। वगना कण्ठ विराजत मानहु ऊपर सुभग निकाईरी । दुतिया चन्द अनन्द जानि कै घन में देत दिखाईरी । अरुण पीत सीत हरित कुंधनई स्याम सुभग कटि सोहेरी । जलद घटा पर मनहुं प्रकट भये ईन्द्रधनुप मनमोहेरी ।। कौशल्या की कुख कलप तरु रामचन्द्र फल लागेरी । पुण्य प्रभावते अगम अगोचर कौन सुकृत यह जागेरी ।। शंकर शेप विरँचिशारदा जिन्हि स्वरूप नहिं जानैरी । ताके गुण अलि अग्रदास कछु मति अनुमान बखानेरो ।।

श्री अग्रपद १२१–आसावरी-प्रगट भये दशरथ के रघुवर । महामहोत्सव मंगल घर घर ।। देखो आजु अवधपुर शोभा, नरनारी आनन्द उरगोभा । सुनत सवै आतुर हेइ धावैं, हरित दूव दधि नृपति वँधावैं ।। मोतियन चौक वधाओ गावैं नव तरुणि साथिया वनावैं । ध्वजा पताका मण्डित घर घर, दिव्यदुक्ल सुगन्ध सिंचिघर ।। घर अम्वर बाजे वहु वाजें, मनहु महोदधि लहरीं गाजैं। विप्र वेद धुनि व्योमनि परसत, सुर संघट कुसुमानि अति वर्षत ।। भोर भूप घर अतिशै राजै, कोउ लेवै कोउ देवै काज ।। भूमि वाजि गज विप्रन पाये, धेनु रतन अन वसन अघाये। याचक जन ता चरण जो आये, दान मान वान्छित फल पाये ।। कहत सबै धन वचन हमारे, चिरँजीवो ये पुत्र तुम्हारे । अग्र वधाई यह नित पावै, जन्म कर्म लीला गुन गावै ।।

श्री अग्रपद १२२–राग टोड़ी-राम जन्म आनन्द वधाई ।। सुरतरु सुधाधेनुचिन्ता-मणि मिलत परस्पर दूव वँधाई । प्रफुलित हृदय नगर वासिन के वाल वृद्ध सब वात सुहाई ।। भई भीर नाचे नर नारी वाजै वहुत गने नहि जाई । मंगल

कलश चौक मोतियन के द्वारन बन्दन बार बँधाई ।। शिशु को बदन निहारी नारि सब वारति भूषण लेत बलाई । रतन गर्भ कौशल्या रानी धन्य भाग की करत बड़ाई ।। दशरथ राय न्हाय भये ठाढ़े कनक वसन अन्न धेनु मगाई । परम पुनित बिप्र पद बन्दित दान मान जनु घन वर्षाई ।। मागध सूत भाट बन्दी जन अष्ट सिद्धि नव निधि पाई दशरथ सुत नित प्रतिहौं देखों अग्रदास कै यहै जिय भाई ।।

श्री अग्र पद १२३–ढाढ़ीपद राजपरज-तिहारो ढाढ़ी आयो हो रघुवंशी यजमान । जन्म २ ढाड़ी या घर को मान सहित दे दान ।। रबि अनरण्य इक्ष्वाकु अंग रघु धुंधुमार युबनाश । काकुथ सगर दिलीप भगीरथ गंगा अवनि प्रकाश ।। हरिकीरतिसम वंश विशद अति मोमति जाय न जान । इक्षा सुत शारदा शेष सुर वेद पुरान बखान ।। सुत जायो सुनि पंगतिरथ के मोमन रंग रली । उपजीवी अज भूप द्वार को वारी सुफल फली ।। लछि मन भरत सत्रुहन सुन्दर न म सकल गुन सार । धीर गम्भीर अभैयकरि मतिसो अतिही शील उदार । मैं पाई सन्तनि मुख ग्रन्थनि सुनहु नृपति दै कान । जन्म न देख्यो रामचन्द्र को भूत भविष बर्तमान ।। वेद उधार कमठ करुणा कर धरणी धर त्रय नैन । हरष फरषधर, असुर बिमोहन बिंग बचन सुनि जैन ।। ऋषि मष सन्त धर्म रखवारी कौशल्या सुत करिहैं । दुष्ट दमन करि बांधि बारि निधि विपति देव सब हरिहैं ।। भू कन रेणु बुन्द वर्षा की उडुगण है निरधार ! गर्बित बचन सुनत ढांढी को रघुपति गुणनि अपार ।। धर्म सार श्रुतिसार शिरोमणि कान्ति अधिक तन तेज । चरण चिन्ह सरवेश्वर के सब बिधि मनु रच्यो बन्धेज । ढाढी अग्रदास दशरथ गृह याचत बारम्बार । साधु संगति कीरति तव सुत की रचो रहों दरवार ।।

श्री अग्र पद १२४– राग टोड़ी सूर फागता — आज दशा दशरथ नृप की अति रानी रतनखानि कुषि खूली । सुनत सुधा बरष्यो त्रिभुवन में सन्त कमल श्रेणी हृद फूली ।। लछिमन भरत सत्रुहन सुन्दर प्रगटे राम सजीवन मूली । शिव विरचि सुर शेष नींगधर गुण गण गान शारदा भूली ।। अष्ट सिद्ध नव निद्ध मुक्ति चतुर्धा अवध के द्वार द्वार अनुकूल । अग्रदास रघुनाथ जनमते मंगल अवर नही कोइ तूली ।।

श्री अग्र पद १२५–राग गौरी—नृप दशरथ के पुत्र भये सुर पुर में वजत बधाई री ।। घर २ मगल चार अवधपुर बन्दनवार बधाई री । चतुर सखी मिलि साथियां दीन्हे विधि सो सीख भराई री ।। चन्दन चौक रचित आगन में रतन जड़ित अंगनाई री । कृत कौतुक कौशलपुर बासी याचक अभर भराये री ।। अवधपुरी आनन्द भयो भर वांटत बहुत वधाई री । अग्रदास रघुवर के जनमत मन वांछित फल पाई री ।।

श्री अग्र पद १२६–आसावरी– फूले फिरत अयोध्या वासी। सुन्दर सुत जायो कौशल्या रामचन्द्र सुख रासी ॥ घर घर बन्दन माल साथियां मोतिन चौक पुराये। नाचत गावत देत बधाई मनु घर २ सुत जाये ॥ गली २ गज बाजि

जहां तहं हलका दिये तवेले। दान बहुत याचक जन थोंरे कापै जात सकेले ॥ दशरथ भूप भण्डार मुकर किये वन्दी अभर भरे। सकट सोलि ताही सों हमला ढोये ढ़ेर धरे ॥ सन्त कमल सुख देन काज रबि राघव उदै करयो। मुदित देव दुन्दुभीं बजावत निश्चर तिमिर हरष्यो ॥ देत अशोश नगर नारीनर चिरंजीवो रघुवीर। अग्रदास आनन्द अखिलपुर मिटी ताप तन पीर ॥

श्री अग्र पद १२७– लाल इन बोलन के बलि जैहों छोटे २ चरण धरत अति सुन्दर ठुमकि ठुमकि हलरैं हौं ॥ कटि किंकिनि पग नूपूर वाजे मधुरे शब्द सुनैहौं। सब बालक रघुबर छबि निरखत प्रेम प्रीति लपटं हों ॥ घुंघर वारे अलक वदन पर मन्दहशन सुख पैंहौं। जाको ध्यान धरत ब्रह्मादिक सारद गान करैं हौं ॥ गोदराखि पय पान करावत दशरथ लेत बुलेहौं। यह छवि देखि मगन सुर मुनि भये रवि शशि कोटि लजैहौं ॥ शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक निगम नेति यश गैंहों। अग्रदास भजु दशरथ नन्दन दिन प्रति दिन अधिकैंहों ॥

श्री जानकी जन्म बधाई उत्सव

श्री अग्रपद १२८–अखिल लोक श्री उदय भई हैं जनक रामपुर जाई। निर–उपम कन्या निमि कुलके सीता ऐसी नांई ॥ बरनत बिदुष पार नहीं पावत बाकि रही लजाई। जाके चरण कमल भव नौका नाहिन यान उपाई ॥ निगम सार सामान सुयश जेहि कहत तपोधन आई। ब्रह्म रुद्र अजहूं पद आश्रित अग्र दास बलि जाई ॥

श्री अग्रपद १२९–ठुमुक २ चलत चाल जनक नन्दनी ॥ मधुर वचन तोतरे त्रयताप मोचनी ॥ सोहत नव नील बसन मन्द हास रुचिर दशन झलकत उर माल सकल देव बन्दनी ॥ वाजत पग नूपुर मनो शाम वेद करत गान क्षुद्र घंटि रुचिर नाद उर अनन्दनी ॥ जगत मात सखिन संग विहरत बहु करत रंग अग्र अली निरखत छवि भवनिकन्दिनी ॥

श्रीमती सर्वेश्वरी जू को बधाई

वधइयां गुइयां हिलि मिलि गावो राज ॥ चन्द्रकान्ति जु कि कोखि सी रानी, सुतासु जन्मी आज। सत्रु जीत नृप देत मुदित मन, पट भूषन गज बाज ॥ हरषि बुलाय २ याचकन बिदुपन विप्र समाज। बाल अली, नौवत धुनि वाजहिं, जनु सावन घन गाज ॥

लखोरी मिथिला मोद भरी ॥ माधव शुक्ल पक्ष पूरन तिथि वासर चन्द्र धरी । चित्रा नखत लगन धन धनि वह धन्य सो धन्य घरी ॥ रानी चन्द्र कान्ति नृप अरिजित सुकृतकि वेलि फरी । जन्मी चारुशिला जू तिन की चन्द्र अली अनुचरी ॥

दोहा—अतिमाधुर्य स्वरुप सिय पिय पद पंकज प्रेम ।
गुन ऐश्वर्य स्वरुप श्री चारु शिला करक्षेम ॥

हाय हमेशा हरदम निकशैं विकसै वदन पियाशे हैं । प्याला सौक जौक जालिम का कहर मिहर सम भाशे हैं ॥ आव अजूब खूब प्रीतम रुख सो सुख सहज प्रकाशे हैं । युगला नन्य शरन यह लच्छन वेगम हृदय हुलाशे हैं ॥

सुनि आइरी आज में तो होरि किभनक । रंग डारोंगि वाहिपै जिनतोरचो है धनुप ॥ झूमि २ उठि दौरि महल ते केशरि रंग कुंकुमा कनक । खेतल राम जाकी के सग होनि मधुर पिचकारि कि सनक ॥ कोइ कहै रंग डारो लखन पै कोई कहै या खिलारी पै तनक । कोइ उमगि मुख मलत लाल के कोई हंसत दै दै तारिकि ठनक ॥ अति आनन्द होत यहि पुर में उड़त गुलाल अगर कि सलक । तुलसिदाश धनि २ राजा दशरथ वनि २ हैं मिथिलेश जनक ॥

अनुजन संख लिये होरी खेलत राम उदार ॥ गृह २ ते बनिता वनि आई कीन्हे विविध शृंगार ॥ कुम २ अगर अवीर गुलालन संगलिये बहु भार । उत रघुवीर सखा वनि आयें रंग भरे पिचकार ॥ एक ओर मिथिलेश कुमारी उत अवधेश कुमार ॥ खेलहि फाग झमुटि दोउ दिशि ते काहुहि सुधि न सम्हार । वर्षहि रंग अवीर गगन धुनि वाजन गान अपार ॥ एक सखी होइ सखा रामढिग आइ, 'सुनहु मत सार' । रामचरन मुख चूमि परानी हसि रहे राज कुमार ॥

डफवाजी जनक दुलारी की ॥ डफ वा० ॥ नवसतसातसजी सब सखियां नव योवन मतवारी की ॥ ड० ॥ झपटि लपटि सब सखा भगाये धूम मचाई गारी की ॥ ड० ॥ राजकुंकार को पकड़ि मंगाई जीत लिखाई प्यारी की ॥ ड० ॥ कृपानिवाश रसीली अंखियां रसिकजनन रसकारी की ॥

परी मेरो स्याम सनेही मेरे वश अनुराग । अधरामृत दै गल भुज मेलो खेलोंगी संगफाग । कुचनि गुलाल लालपर डारों उरझौं मनमथ जाग ॥ नैनन की शेनन सौं छिरकों प्रगट करौं सब लाग ॥ पिय के शीश

उढाउब चूंदरि मैं जुधरों शिर पाग। लाल नचाऊं अपने आगे में गाऊं हंसि राग। जोइ जोइ कह्यों कियो सिय प्यारी भारी भरि हैं सुहाग। कृपा निवास महासुख निरखत सखियां सराहत भाग॥

संइयां जाने न पैहौ डारो न मो पर रंग। श्री मिथिलेश लली जु कि अलि सब, आनि जुरी यक संग॥ सुनि संकुचाय रंमाय दृगन दृग बोलत बचन उमंग। काह करेगी विपुल नारि लगि जाओ हमारे अंग॥ कन्ठ लगाय भिजाय भिजे रंग वाढयों परस्पर जंग। युगल प्रिया यह पाग अनोखी लखि रति पति मद भंग॥

स्याम मुख रंग कि बूंद ढरी। मानहु काम कसौटी ऊपर कंचन की कस परी॥ अलकें चुवैं मनो घन माला रस अनुराग भरी। कृपा निवास अली गण अंखिया सियवर रूप अरी॥

खम्माच—होरि के खिलारि रंग डारो न रसिया॥ चुनरि भिजोइ मोरि चटक छबीलि किय कहां लो सहुँगि तेरीं नित नई हंसिया॥ धरि झकझोरि मोरि मोति लर तोरि प्यारे। ऐसि बरजोरि रोरि भरत दृगत मोरि, ताहू पै मारत तकि चितवनि गंसिया॥ शुभगा सलोनि चारुशिला अतिशीला अली। सौज तयारि सारि कियो है सुन्यारी न्यारी॥ तहां जीत पावो तव जानू में तुम्हारो बल, ज्ञाना अली खेलैं पिय प्यारी छवि लशिया॥

मोसों नाहक करि बरजोरी लालन होरी खेलीहो। में कोउ हेतु अकेलि गलि गइधरि कर करहि मरोरी हो। विनय बरजि तरजो नहि मानैसान्यो मुख में रोरी हो॥ लाज नहींगुरू जन पुर जन तोहि अवमें काह करौंरी हो। कोविद कवि ढवि होरि नहीं यह २ है भोरा भोरी हो॥

होरि के दिनन में रोष नकरिये मानो जि मानो मेरि बात। लखि न सुनी यह रीति अली हम खेलत में खुनसात। बिनय करत रघुलाल संवरो पद गहि हाहा खात। सीचिय सुघर शिरोमनि सियजू पिय पादप कुमिल्हात। मृदु हंसि हेरनि वंक विलोकनि शंकनि पिय कदरात। सन-ख आवत हमसों अलिगुग जोरत कर जलजात। सखि मुख पिय की विनय सुनत सिय मृदु वचन करि मुसकात रसिक अली रस रंगभरी पिचकारि दई पिय गात।

सखीरी काह कहूमें अवधके छैला छली । जात रही सयू जल भरने मिलि गये बीच गली । लैकर कंज गुलाल मजे से मेरे मुख में मली । मधुर अली महबूब वली सो कछु नहि जोर चली ।। सारी भीज गई पिय डारों न मोपर रंग । सीतभरी कम्पत तन मेरो दीजै गल भुज संग ।। लखि ललचाय ललकि लै प्यारी खेलत नवल उमंग । रसिक अली सुन्दर मनि रघुबर वाजत मृदु रव चग ।।

री वह पीरी न जानत अंखियन भरत अबीर ।। मुसुकावत धरि नरम कलाई खैंचत धरि २ चीर ।। झकझोरत मोहि पकरि २ अंग मारत तकि दृग तीर ।। मोहनि छिन २ अंक भरत है कसि कसि के वेपीर ।।

खेलैं राघोजि तियन बिच होरी हो । लाल गुलाल भरे तन सोहत मरकत शैल अरुन परस्योरी ।। बिथुरे कच आनन छबि राजत चन्द चहूं दिशि राहु फिर चोरी । कर कंचन पिचका अस सोहत जनु अहि मनि मुख लै निकस्योरी । पकरि तियन मुख रंग मलत जनु राहु अतन लै शशि भगरचोरी । रसिक अली यह रूप सुघानिधि जानि अछै मन मीन फंस्योरी ।।

सांवरो होरी खेलन आवै । रंग पिचकारि छिपाय बसन में औचक आनि भिजावैं ।। या अवधेश को छयल नयो सखि कर गहि कम्प बढ़ावैं । रसिक पिया भरि आंख अकीरन अट पट बैंन सुनावैं ।।

पिचकारि तिहारि रंगदार लला जू जानि डारो मौपै । सी उपजावत कम्प बढ़ावत रहत न देह सम्हार ।। अमित हजारा से छबि छूटत कसकत हृदय हमार । रसिक पिया दृग चोट चलावै सुन्दर राजकुमार ।।

।। इति श्री अग्र स्वामी जी कृत पदावली सम्पूर्णम् ।।